राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 1

पुराने नियम का अध्ययन क्यों?

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....................1
हम से दूरी....................2
कारण....................2
जैविक प्रेरणा....................2
दिव्य समायोजन....................4
प्रकार....................4
धर्मविज्ञानी....................5
सांस्कृतिक....................6
व्यक्तिगत....................6
हमारे लिए प्रासंगिकता....................7
यीशु की शिक्षाएँ....................8
नकारात्मक टिप्पणियाँ....................8
सकारात्मक पुष्टियाँ....................12
पौलुस की शिक्षाएँ....................13
नकारात्मक टिप्पणियाँ....................13
सकारात्मक पुष्टियाँ....................15
हमारे लिए प्रयोग....................16
चुनौती....................16
संबंध....................18
वही परमेश्वर....................18
वही संसार....................21
उसी प्रकार के लोग....................21
विकास....................23
युग-संबंधी....................24
सांस्कृतिक....................25
निजी....................26
उपसंहार....................26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय एक

पुराने नियम का अध्ययन क्यों?

परिचय

यदि हम उन लोगों से जिनकी कोई पारम्परिक यहूदी या मसीही पृष्ठभूमि नहीं है यह पूछें कि, "व्यक्ति को पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए?" तो उनका उत्तर संभवत: दो मूल दिशाओं में जाएगा। अधिक सकारात्मक उत्तर कुछ इस प्रकार हो सकते हैं, "पुराना नियम एक पुरानी पुस्तक है, परन्तु हमें इसका अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इसमें अब भी कुछ ऐसी बातें हो सकती हैं जो आज हमारे लिए अच्छी हैं।" और अधिक नकारात्मक उत्तर इस प्रकार होंगे, "वास्तव में, पुराना नियम इतना पुराना और अप्रासंगिक है कि यह पढ़ने के योग्य भी नहीं है।"

जब विश्वासयोग्य मसीही दूसरे लोगों को पुराने नियम के बारे में इस प्रकार के विचार अभिव्यक्त करते हुए सुनते हैं, तो हम नैसर्गिक रूप से व्याकुल होकर पीछे हट जाते हैं। मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम विश्वास करते हैं कि पुराना नियम परमेश्वर का वचन है; यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित पवित्र वचन है। इस कारण हम चकित होते हैं कि लोग बाइबल के बारे में इस प्रकार कैसे कह सकते हैं? यह शुरूआत में आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है, परन्तु जब हम मसीहियों से पूछते हैं कि "एक व्यक्ति को पुराने नियम का अध्ययन क्यों करना चाहिए?" तो हम में से अधिकाँश का उत्तर अविश्वासियों के समान ही होता है। हमारा सर्वोत्तम उत्तर होता है, "हमें पुराने नियम का अध्ययन इसलिए करना चाहिए क्योंकि इस में कुछ ऐसी बातें हैं जो आज भी हमारे लिए अच्छी हैं," और कुछ मसीही यहाँ तक कहेंगे, "यदि ईमानदारी से कहें तो पुराना नियम इतना पुराना और अप्रासंगिक है कि यह पढ़ने के योग्य भी नहीं है।"

यह सम्पूर्ण पुराने नियम का सर्वेक्षण करने वाले अध्यायों की श्रृंखला का पहला अध्याय है। हमने इस श्रृंखला को राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन शीर्षक दिया है। जैसे इस श्रृंखला का शीर्षक सुझाव देता है, इन अध्यायों में हम पुराने नियम के तीन महत्वपूर्ण आयामों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे: हम देखेंगे कि पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के केन्द्रिय विषय पर एकीकृत पुस्तक है; इस राज्य का ऐतिहासिक प्रशासन परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के साथ बान्धी गई वाचाओं के द्वारा किया गया; और पुराने नियम कैनन के द्वारा इन वाचाओं को समय और स्थान विशेष पर परमेश्वर के लोगों की विशिष्ट आवश्यकताओं पर लागू किया गया।

हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "पुराने नियम का अध्ययन क्यों?" इससे पहले कि हम राज्य, वाचाओं और पुराने नियम के कैनन को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करें, इस प्रथम अध्याय में हम प्राथमिक मुद्दे पर ध्यान देंगे- पुराने नियम का महत्व और प्रासंगिकता। तथ्य यह है कि बहुत से अच्छे मसीहियों को यह विश्वास ही नहीं है कि पुराना नियम सावधानीपूर्वक अध्ययन के योग्य है।

इस अध्याय में हम तीन कारणों को देखेंगे कि पुराने नियम के बारे में सीखना महत्वपूर्ण क्यों है। पहला, हम देखेंगे कि पुराने नियम को हमसे अलग करने वाली दूरी पुराने नियम के अध्ययन को कठिन बना देती है; दूसरा, हम उस प्रासंगिकता की जांच करेंगे जिसकी हमारे समय में पुराने नियम से हमें अपेक्षा रखनी चाहिए; और तीसरा, हम कुछ मार्गों का अनुसंधान करेंगे जिनके द्वारा हम आधुनिक संसार में पुराने नियम को अपने जीवनों में लागू करना सीख सकें। आइए पहले हम इस तथ्य को देखें कि पुराना नियम अक्सर हमसे बहुत दूर प्रतीत होता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम से दूरी

वर्षों के दौरान मैं ने पाया है कि पुराने नियम का अध्ययन करते समय बहुत से छात्र एक समान, अनुमान लगाई जा सकने वाली प्रक्रिया से गुजरते हैं। बचपन में, या जब हम मसीही बनते हैं, तो हमें बताया जाता है कि पुराना नियम परमेश्वर का अचूक अभिप्रेरित वचन है, और इसके प्रकाश में, हम में से बहुत से लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि पुराने नियम में केवल वे शिक्षाएँ शामिल हैं जिन्हें आसानी से मसीही जीवन में लागू किया जा सकता है। अब, जब तक हम केवल वृहद् शीर्षकों के बारे में बात करते हैं जैसे परमेश्वर की पवित्रता, इस्राएल की आशाएँ या आज्ञाएँ जैसे, “तू चोरी न करना” या “तू हत्या न करना,” हमें महसूस होता है कि हम परिचित क्षेत्र में हैं। परन्तु जब हम पुराने नियम का अधिक गम्भीरता से अध्ययन करना शुरू करते हैं तो कुछ होता है। जब हम इस में अधिक गहराई में उतरते हैं, तो हम पाते हैं कि पुराने नियम के कुछ भाग ऐसे विषयों को प्रस्तुत करते हैं जो बिल्कुल भी परिचित नहीं हैं। वास्तव में, इसे हम जितना अधिक पढ़ते हैं, पुराने नियम में सहज महसूस करना उतना ही कठिन होता जाता है; और हम में से बहुत से लोगों के लिए यह एक अपरिचित और सुदूर क्षेत्र प्रतीत होता है।

जब हम देखते हैं कि पुराना नियम अक्सर इतना सुदूर क्यों प्रतीत होता है, तो यह दो विषयों पर ध्यान देने में हमारी सहायता करता है: पहला, इसकी दूरी के कारण, पुराना नियम इतना अनजाना क्यों लगता है; और दूसरा, दूरी के प्रकार जिनका हम सामना करते हैं, वे अनजानी बातें जिन्हें हम पुराने नियम में पाते हैं।

आइए हम पहले कुछ मुख्य कारणों को देखते हैं कि हमें अक्सर अपने और पुराने नियम के बीच अत्यधिक दूरी का अहसास क्यों होता है।

कारण

अविश्वासियों के पास यह दावा करने के लिए हर प्रकार के कारण हैं कि पुराना नियम आधुनिक लोगों के लिए विदेशी है। उनके कुछ अनुमान वैध हैं, तथ्यों पर आधारित हैं, परन्तु उनके बहुत से विचार केवल उनके अविश्वास का परिणाम हैं। अविश्वासियों में उद्धार देने वाला विश्वास नहीं होता है, और इस कारण वे इस बात को बढ़ा चढ़ाकर कहते हैं कि पुराना नियम कितना अपरिचित है। जब आप परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं, तो परमेश्वर के बारे में अत्यधिक बात करने वाली एक पुस्तक निश्चित रूप से आपको बहुत अपरिचित लगेगी। और जब आप मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं, तो परमेश्वर के लोगों को मसीह के लिए तैयार करने वाली पुस्तक भी आपको विदेशी लगेगी। अतः, जब अविश्वासी कहते हैं कि पुराना नियम आधुनिक जीवन से बहुत दूर प्रतीत होता है तो हमें चकित नहीं होना चाहिए।

परन्तु विश्वासी? हम पवित्र वचन के परमेश्वर पर विश्वास करते हैं; हम मसीह का अनुगमन करते हैं। हमें अपने और पुराने नियम के बीच दूरी का अहसास क्यों होता है? पुराने नियम की कम से कम दो विशेषताओं के कारण हम अक्सर उसे विदेशी क्षेत्र मानते हैं। एक तरफ, परमेश्वर ने पुराना नियम मनुष्यों को एक ऐसी प्रक्रिया के द्वारा दिया जो जैविक प्रेरणा कहलाती है। और दूसरी तरफ, परमेश्वर ने पुराने नियम का निर्माण किया कि वह इसके उद्देश्य को दिव्य समायोजन नामक प्रक्रिया के द्वारा पूर्ण करे। ये दो विशेषताएँ, जैविक प्रेरणा और दिव्य समायोजन, ही हमारे द्वारा महसूस की जाने वाली अधिकाँश दूरी का कारण हैं। आइए पहले हम जैविक प्रेरणा की प्रक्रिया के बारे में देखते हैं।

जैविक प्रेरणा

हम पवित्र वचन की प्रेरणा के ऐतिहासिक सुसमाचारीय मसीही विचार को अक्सर “जैविक प्रेरणा” कहते हैं। हम इस शब्द का प्रयोग यह बताने के लिए करते हैं कि पवित्र आत्मा ने बाइबल के

लेखन में मौलिक मानवीय लेखकों के व्यक्तित्वों, अनुभवों और इच्छाओं का प्रयोग किया। इसका अर्थ है, कि पवित्र आत्मा के विशेष मार्गदर्शन के अन्तर्गत, मानवीय लेखकों ने स्वयं निश्चय किया कि क्या लिखना है। बाइबल यांत्रिक प्रेरणा का परिणाम नहीं है जहाँ परमेश्वर ने मानवीय लेखकों का सूचना के निष्क्रिय माध्यमों के रूप में प्रयोग किया; न ही बाइबल भावुकता से प्रेरित है जैसे कि परमेश्वर ने बाइबल के लेखकों को केवल धार्मिक रूप से ऊँची बातों को लिखने की प्रेरणा दी। इसके विपरीत, परमेश्वर ने सतर्कता से पवित्र वचन की विषय सूची को नियन्त्रित किया ताकि यह त्रुटिरहित हो और वास्तव में परमेश्वर का वचन कहला सके। परन्तु उसने एक प्रक्रिया के द्वारा ऐसा किया जो मानवीय लेखकों के निजी व्यक्तित्वों और उद्देश्यों पर निर्भर थी और उनको प्रतिबिम्बित करती थी।

देखें पतरस ने 2 पतरस 3:15 और 16 में पौलुस की पत्रियों के बारे में क्या कहा। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। (2 पतरस 3:15-16)

इन पदों में, प्रेरित पतरस ने पुष्टि की कि पौलुस की पत्रियों को परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि से लिखा गया था। अन्य शब्दों में, परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस की पत्रियों को प्रेरित किया जिस से वे केवल मानवीय लेख नहीं, परमेश्वर के लेख थे। परन्तु, पतरस यह पुष्टि भी करता है कि इन पत्रियों के द्वारा पौलुस का व्यक्तित्व दिखाई देता है। ध्यान दें वह क्या लिखता है: "पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे परमेश्वर से मिला।" ये पवित्र वचन अब भी पौलुस के ही पत्र थे। अत:, हम देख सकते हैं कि पतरस के अनुसार प्रेरित पौलुस की पत्रियाँ एक प्रक्रिया का परिणाम हैं जिस में परमेश्वर और मानवीय लेखक दोनों शामिल थे।

यही विचार पुराने नियम के बारे में भी सत्य है। इसी कारण पुराने नियम की व्यवस्था को न केवल परमेश्वर की व्यवस्था, बल्कि मूसा की व्यवस्था भी कहा जाता है। यह परमेश्वर से आई, परन्तु मूसा के द्वारा। इसी कारण बहुत से भजनों को भी दाऊद के भजन कहा जाता है। यद्यपि अन्तिम रूप से पुराने नियम का लेखक परमेश्वर था, परन्तु उसने इन पुस्तकों को लिखने के लिए पवित्र व्यक्तियों का प्रयोग किया, और उन्होंने इसे इस प्रकार किया जिस से उनके व्यक्तित्व, इच्छाएँ, और परिस्थितियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं।

जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं है कि बाइबल का मानवीय लेखन हमें पुराने नियम से दूर करता है। पुराने नियम के सारे लेखक प्राचीन लोग थे। वे सब प्राचीन मध्य पूर्व के संसार में रहते थे, और उनकी सोच और लेखन उनके समय के लोगों के समान थे। उन्होंने मसीह के आगमन से पूर्व लिखा, इसी कारण, पुराने नियम के लेखकों के पास पूर्णत: विकसित मसीही धर्मविज्ञान नहीं था, जैसा आज हमारे पास है। और इसके परिणामस्वरूप, जब आप और मैं पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो जल्द ही हमें दिखाई देने लगता है कि पुराने नियम का संसार आधुनिक संसार से बहुत अलग है। और यही कारण है कि पुराना नियम अक्सर विदेशी और अपरिचित प्रतीत होता है।

बाइबल के लेखकों की जैविक प्रेरणा के कारण उत्पन्न समस्याओं के अतिरिक्त, हमें समझना चाहिए कि दिव्य समायोजन भी हमें पुराने नियम से दूर करता है।

दिव्य समायोजन

"समायोजन" एक शब्द है जिसका धर्मविज्ञानी इस तथ्य को बताने के लिए प्रयोग करते हैं कि परमेश्वर जब कभी स्वयं को मनुष्यों पर प्रकट करता है तो वह हर बार नश्वर मानवीय शब्दों में बात करता और प्रकट होता है। चूंकि परमेश्वर को पूरी तरह समझा नहीं जा सकता, इसलिए जब कभी वह अपने आप को प्रकट करता है तो वही झुकता है और हमारे साथ "बच्चों की सी बातें" करता है। अन्यथा, हम परमेश्वर द्वारा कही गई किसी भी बात को नहीं समझ पाते। आपको याद होगा कि यशायाह 55:8 और 9 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है। (यशायाह 55:8-9)

परमेश्वर इतना श्रेष्ठ है-वह हमारी सीमाओं के इतना परे है-कि उसके द्वारा दिए गए प्रत्येक प्रकाशन को मानवीय क्षमताओं के अनुसार समायोजित किया गया है ताकि कम से कम हम में से कुछ लोग उसे समझ सकें और उसका पालन कर सकें जो उसने प्रकट किया है।

अब, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम में परमेश्वर ने स्वयं को सम्पूर्ण मानवता के लिए समायोजित नहीं किया। उसने मानवीय भाषा में बात की जिस से नश्वर मनुष्य उसे समझ सके। परन्तु उसने पुराने नियम को उन विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिए भी तैयार किया जिनका प्राचीन पूर्व में रहने वाले यहूदी सामना करते थे। उसने पवित्र वचनों को मुख्यत: इस प्रकार तैयार किया कि प्राचीन इस्राएली उसे समझ सकें। चूंकि पुराने नियम के प्राथमिक श्रोता प्राचीन यहूदी थे, इसलिए परमेश्वर ने पुराने नियम को प्राचीन इब्रानी और अरामी भाषा में लिखवाया। परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को पत्थरों पर दिया क्योंकि वह महत्वपूर्ण अभिलेखों को लिखने का अन्तर्राष्ट्रीय प्रमाप था। और लेखन शैली, काव्य, बौद्धिक साहित्य, और व्यवस्था जिसे हम पुराने नियम में पाते हैं वे प्राचीन पूर्व के अनुरूप ही थे ताकि उस समय के परमेश्वर के लोग उसके द्वारा कही गई बातों को समझ सकें। इस कारण, जब आप और मैं पुराने नियम को पढ़ते हैं, हमारा निरन्तर इस वास्तविकता से सामना होता है कि यह ऐसे लोगों के लिए लिखा गया था जो हम से बहुत अलग थे। इसे विशेष रूप से प्राचीन इस्राएल के लोगों की योग्यताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप लिखा गया था।

अत:, हम कह सकते हैं कि पुराने नियम के पवित्र वचन मेरे और आपके लिए अक्सर इसलिए अपरिचित क्षेत्र प्रतीत होते हैं क्योंकि वे जैविक रूप से प्रेरणा प्राप्त थे और उन्हें मूल इस्राएली श्रोताओं के लिए समायोजित किया गया था। पुराने नियम के लेखक और श्रोता जिन प्राचीन समयों में रहते थे वह हमारे समय से बहुत अलग था। इसी कारण, हमें पुराने नियम और स्वयं के बीच अक्सर बड़ी दूरी का अहसास होता है।

पुराने नियम की दूरी के दो कारणों को देखने के बाद, अब हमें अपने दूसरे विषय पर आना चाहिए: दूरी के प्रकार जिन्हें हम अपने और पुराने नियम के बीच पाते हैं। पुराने नियम में हम किस प्रकार की बातों का सामना करते हैं जो हमें अपरिचित प्रतीत होती हैं?

प्रकार

यह कहना आवश्यक नहीं है कि हम पुराने नियम की उन सारी बातों को नहीं गिन सकते हैं जिनके कारण पुराना नियम हमें अपरिचित लगता है, परन्तु पुराने नियम और हमारे बीच की दूरी को तीन मूलभूत प्रकारों के अर्थ में सोचना हमारे उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक होगा: पहला, धर्मविज्ञानी दूरी, नये

नियम के मसीहियों के रूप में हमारे विश्वास और पुराने नियम में दिए गए धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों के बीच अन्तर; दूसरा, सांस्कृतिक दूरी, हमारी आधुनिक संस्कृतियों और पुराने नियम में पाए जाने वाले विशिष्ट प्राचीन पूर्वी सांस्कृतिक दृष्टिकोणों के बीच अन्तर; और तीसरा, व्यक्तिगत दूरी, मेरे और आपके तथा पुराने नियम से जुड़े हुए लोगों के बीच व्यक्तियों के रूप में अन्तर।

अब, हम सबको यह समझना चाहिए कि जीवन के धर्मविज्ञानी, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत आयामों को एक-दूसरे से पूर्णत: अलग नहीं किया जा सकता है; वे गहरे जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को अनगिनत रूपों में प्रभावित करते हैं। यह पुराने नियम के दिनों में भी उतना ही सत्य था जितना कि आज हमारे समय में है। अत:, दूरी के इन तीन प्रकारों के अर्थ में इन विषयों की चर्चा एक प्रकार से कृत्रिम होगी। फिर भी, यह हमारी सहायता करेगा कि हम इन तीनों विषयों पर अलग-अलग कार्य कर सकें।

आइए पहले हम धर्मविज्ञानी दूरी को देखते हैं जिस से पुराने नियम का अध्ययन करते समय हमारा सामना होता है।

धर्मविज्ञानी

पुराने नियम के अध्ययन में सर्वाधिक स्पष्ट अवरोध वह अन्तराल है जिसे हम पुराने नियम के धर्मविज्ञान और हमारे नये नियम के मसीही धर्मविज्ञान के बीच पाते हैं। जब हम धर्मविज्ञानी दूरी की बात करते हैं, तो हम मुख्यत: पुराने नियम के लेखकों को प्राप्त प्रकाशन और मसीहियों को प्राप्त पूर्ण प्रकाशन के बीच ऐतिहासिक अन्तर के बारे में सोच रहे हैं। हमारे मन में यह तथ्य है कि पुराना नियम हमें परमेश्वर और उसके साथ हमारे संबंध के बारे में बहुत सी बातें बताता है, जो कम से कम पहली नजर में, नये नियम की शिक्षा से बहुत अलग प्रतीत होता है। पुराने नियम को पढ़ने वाले प्रत्येक मसीही को एक या दूसरे बिन्दू पर यह पता चलता है कि पुराना नियम ऐसे धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करता है जो नये नियम के अनुरूप प्रतीत नहीं होते हैं।

इन धर्मविज्ञानी अन्तरों के कुछ उदाहरणों के बारे में सोचें। जैसे, परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र का बलिदान करने के लिए बुलाया। परन्तु क्या आज हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचेंगे जो कहे कि परमेश्वर ने उस से अपने पुत्र को बलि करने के लिए कहा था? हम ऐसे धर्मविज्ञानी दावे पर ध्यान ही नहीं देंगे। और मूसा के दिनों में, परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य लोगों से अपेक्षा की कि वे मिस्र से वायदे के देश तक चलकर अपने उद्धार की खोज करें। परन्तु हमारे लिए यह आश्चर्यपूर्ण होगा यदि हम एक ऐसे मसीही समूह को देखें जो उद्धार पाने के लिए मरूभूमि में से होकर जाता है। पुराने नियम में हम ऐसे लोगों के बारे में भी पढ़ते हैं जिन्होंने नाजीर बनने के लिए अपने बालों को न काटने की मन्नत मानकर अपने आप को परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित किया; परन्तु यह निश्चित रूप से हमारे लिए आश्चर्यजनक है कि परमेश्वर ऐसी मन्नतों से बहुत प्रसन्न था। या इस तथ्य को देखें कि पुराने नियम में, परमेश्वर ने केवल मन्दिर को ऐसे स्थान के रूप में निर्धारित किया जहाँ उसके लोगों को मृत्यु की पीड़ा के अधीन आराधना करनी थी। परन्तु आज हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि लोगों द्वारा कहीं भी और किसी भी समय परमेश्वर की आराधना करना उचित है। उस समय, परमेश्वर ने पापों की क्षमा के लिए पशुओं को बलि करने की मांग रखी थी। आज हम ऐसे रिवाजों को पशुओं के प्रति क्रूरता, और यीशु मसीह के बलिदान का अपमान करने वाला कृत्य मानते हैं। पुराने नियम में, परमेश्वर ने कनान के नगरों को, स्त्रियों और बालकों सहित, पूरी तरह नाश करने की आज्ञा दी। परन्तु हम आधुनिक युद्ध में परमेश्वर द्वारा ऐसे कार्यों के अनुमोदन की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

क्या हम सब थोड़ी दुविधा में नहीं है कि पुराना नियम हमें यह विश्वास करने के लिए बुलाता है कि परमेश्वर ने इन कार्यों को किया जबकि यह नये नियम से बहुत अलग प्रतीत होते हैं? ऐसे धर्मविज्ञानी अन्तरों की सूची आगे बढ़ती जाती है। हम चाहे जो कुछ भी कहें, हमारे और पुराने नियम के बीच निश्चित रूप से बड़ी धर्मविज्ञानी दूरी है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सांस्कृतिक

पुराने नियम और नये नियम के बीच धर्मविज्ञानी दूरी के अतिरिक्त, प्राचीन मध्य पूर्व और हमारे आधुनिक संसार के बीच सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण भी पुराना नियम एक दूर देश प्रतीत होता है। जब हम पुराने नियम और अपने बीच सांस्कृतिक भिन्नताओं की बात करते हैं, तो हमारे मन में पुराने नियम के पात्रों, मूल लेखकों और श्रोताओं के जीवन के आयाम हैं जो उस समय की संस्कृति की विशेषता थे जिस में वे रहते थे। जब भी हम प्राचीन संसार के जीवन के बारे पढ़ते या कल्पना करते हैं तो हर बार हमें अपने और पुराने नियम के बीच सांस्कृतिक दूरी का अहसास होता है, चाहे वह इस्राएल हो, या कनान, मिस्र, अश्शूर, बेबीलोन, या अतीत की कोई और संस्कृति। पुराने नियम में हम जिन लोगों को देखते हैं उनके पास भी हमारे समान ही अनगिनत सांस्कृतिक अनुमान, मूल्य और व्यवहार थे। परन्तु वे अपेक्षाएँ, रिवाज और व्यवहार उनके समय और स्थानों के कारण हम से अलग थे।

सांस्कृतिक दूरी का कारण है कि मानवीय समाज निरन्तर बदल रहा है। सामाजिक संरचना बदलती है, पुराने रिवाज आश्चर्यजनक प्रतीत होते हैं। क्या आप केवल दो सौ वर्ष पूर्व अपनी ही संस्कृति की कल्पना कर सकते हैं? हम में से बहुत से लोग, भिन्नताओं के कारण असहज हो जायेंगे। हमें सामंजस्य बैठाने में अत्यधिक समय लगेगा। अब, यदि हमारे अपने ही देशों में, इतनी छोटी अवधि की सच्चाई यह है, तो हमें अपने और पुराने नियम के संसार के बीच कितनी अधिक सांस्कृतिक भिन्नताओं की अपेक्षा रखनी चाहिए। प्राचीन पूर्व और हमारे आधुनिक संसार के बीच इतनी अधिक भिन्नताएँ हैं कि पुराने नियम में हम जिन बातों को पढ़ते हैं वे अत्यधिक अपरिचित लगती हैं।

पुराने नियम के सांस्कृतिक आयामों के केवल कुछ उदाहरणों को सोचें हमें उस से दूरी का अहसास दिलाते हैं। सामान्य स्तर पर, पुराने नियम का संसार मुख्यत: कृषि आधारित था। हम पुराने नियम में खेती और मछली पकड़ने के बारे में पढ़ते हैं, परन्तु बहुत से आधुनिक शहरी लोगों को इस प्राचीन जीवन शैली की मूल प्रक्रियाओं की जानकारी नहीं है। पुराने नियम में हम परिवारों की सहमति से किए जाने वाले विवाहों के बारे में पढ़ते हैं, और बहुत से आधुनिक लोग चकित होते हैं युवा जोड़े इस प्रकार के रिवाजों को कैसे सहन करते थे। हम देखते हैं कि बाइबल के लोगों में बहु-विवाह प्रचलित था और हमारे एक पत्नी होने की प्रथा को चुनौती दी जाती है। पुराने नियम में हम दास-प्रथा को पाते हैं और इस रिवाज से हम चकित होते हैं। पुराने नियम के पृष्ठों में हम यह भी पाते हैं कि उनकी संस्कृति साम्राज्यवाद नामक सामाजिक संरचना के अधीन थी। इस्राएल सहित लगभग प्रत्येक प्राचीन पूर्वी संस्कृति में एक प्रमुख साम्राज्य का हिस्सा होना एक आदर्श सामाजिक संरचना माना जाता था। वे हमारे आधुनिक प्रजातांत्रिक आदर्शों के बारे में व्यवहारिक रूप से कुछ नहीं जानते थे। जब हम पुराने नियम के जीवन की ऐसी विशेषताओं को देखते हैं, तो हम अक्सर चकित रह जाते हैं कि हम उनका क्या करें। ऐसी बाइबल का हम क्या करें जो एक ऐसे सांस्कृतिक वातावरण से इतने गहरे जुड़ी है जो हमारी संस्कृति से बहुत अलग है? जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो ये तथा और भी बहुत से अन्य सांस्कृतिक अन्तर हमें अपने और पुराने नियम के बीच अत्यधिक अन्तराल का बोध कराते हैं।

व्यक्तिगत

हमारे तथा पुराने नियम के बीच विद्यमान धर्मविज्ञानी और सांस्कृतिक भिन्नताओं के अतिरिक्त, एक तीसरे प्रकार की दूरी भी है: व्यक्तिगत दूरी। जब हम व्यक्तिगत दूरी या अन्तर की बात करते हैं, तो हमारा मतलब इस तथ्य से है कि पुराने नियम के समयों में रहने वाले लोग आधुनिक समय के लोगों से अलग थे, और उनके तथा हमारे बीच के अन्तराल में अक्सर बहुत व्यक्तिगत, मानवीय सोच-विचार शामिल होते हैं।

निस्सन्देह, पुराने नियम के लोग पूरी तरह हम से अलग नहीं थे। जैसा हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, कई महत्वपूर्ण प्रकारों से हम उनके समान हैं। परन्तु अन्य बहुत से तरीकों में, उनकी मानसिकता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम से बहुत अलग थी। और यह आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए। आखिर, उनकी स्थिति उस धर्मविज्ञानी और सांस्कृतिक संसार में बढ़ी जिस में वे रहते थे।

विचार करें कि एक तरफ, पुराने नियम में बहुत से व्यक्तियों ने हमारे आज के अनुभवों से अलग अद्‌भुत आत्मिक अनुभवों को पाया। उन्होंने स्वर्ग के दर्शनों को देखा, और परमेश्वर की वाणी को सुना। उन्होंने स्वर्गीय व्यक्तियों से शारीरिक मल्लयुद्ध किया। अब एक क्षण के लिए रूक कर अपने आप से यह प्रश्न पूछें। यदि आपको ऐसे आत्मिक अनुभव होते तो आप किस प्रकार अलग होते? यदि आप परमेश्वर द्वारा प्रेरित दर्शनों को देखते, आवाजों को सुनते, और स्वर्गीय लोगों से मल्लयुद्ध करते तो आप किस प्रकार के व्यक्ति होते? मैं सोचता हूँ कि हम मानते हैं कि यदि आज हमें इस प्रकार के अनुभव होते तो हम पूर्णत: रूपान्तरित हो जाते। इसे समझने के द्वारा हमें इस बात को देखने में सहायता मिलनी चाहिए कि हम पुराने नियम के लोगों से बहुत अलग हैं जिन्होंने परमेश्वर के ऐसे अनुभवों को पाया था।

दूसरी तरफ, विचार करें कि सांस्कृतिक प्रभावों के कारण हम किस प्रकार के लोग हैं। पुराने नियम में लोगों ने कुछ ऐसी सांस्कृतिक भूमिकाओं को भरा जो हमारे लिए बहुत अपरिचित है। वे राजा, रानियाँ, किसान, और गुलाम थे। पुराने नियम के लोगों ने प्राचीन युद्धों, अकालों और आपत्तियों के खतरों को सहा। हम एक युवा बालक के बारे में पढ़ते हैं जो युद्ध में साहस के साथ एक दैत्याकार व्यक्ति के सामने खड़ा होता है; एक युवती जो युद्ध में सेना की अगुवाई करती है। हम मिस्र में गुलामों की चीत्कारों को सुनते हैं। हम में से बहुत कम लोग इस प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हैं, और इसके परिणामस्वरूप हमारे लिए यह समझना कठिन होता है कि इस प्रकार की परिस्थितियों से गुजरने वाले लोग क्या सोचते हैं और क्या महसूस करते हैं।

अत:, जब हम इस अध्ययन को शुरू करते हैं तो हमें यह मानने के लिए तैयार रहना चाहिए कि पुराना नियम कई प्रकार से हम से बहुत दूर प्रतीत होगा। बाइबल के इस भाग को हमारे आधुनिक संसार में नहीं लिखा गया था, और इस कारण, हमें बार-बार अपने और पुराने नियम के बीच बहुत सी धर्मविज्ञानी, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत भिन्नताओं का सामना करना पड़ेगा।

हमारे और पुराने नियम के बीच महसूस की जाने वाली दूरी के कारणों और प्रकारों को देखने के बाद, अब हमें दूसरे बिन्दू पर आना चाहिए: पुराने नियम की हमारे जीवनों के लिए क्या प्रासंगिकता है? हमें एक ऐसी अलग पुस्तक से यह अपेक्षा क्यों रखनी चाहिए कि इस में आज हम से कहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण है? इस प्रश्न के बहुत से उत्तर हैं, परन्तु बिना किसी सन्देह के, सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रत्युत्तर है कि अब भी हमें पुराने नियम को अपने जीवनों के लिए महत्वपूर्ण मानना चाहिए क्योंकि नया नियम हमें यही सिखाता है।

हमारे लिए प्रासंगिकता

दुखद रूप से, यदि हमारे समय में नये नियम की किसी शिक्षा को गलत समझा गया है, तो वह यही है। बहुत से मसीही नये नियम को इस प्रकार पढ़ते हैं मानो पुराना नियम अप्रचलित हो गया है, जैसे कि नये नियम ने पुराने नियम की हमारी आवश्यकता को समाप्त कर दिया है। परन्तु यथार्थ यह है कि नया नियम इसके बिल्कुल विपरीत कहता है; जैसा हम देखेंगे यह हमें बताता है कि पुराना नियम मसीही जीवन के लिए अत्यावश्यक है। मसीह में पूर्ण जीवन को तब तक नहीं पाया जा सकता है जब तक कि हम पुराने नियम से मार्गदर्शन नहीं लेते हैं।

नया नियम कई प्रकार से हमें यह सिखाता है कि पुराना नियम आज हमारे जीवनों के लिए प्रासंगिक है, परन्तु हम केवल दो पर ध्यान देंगे: पहला, हम यीशु की शिक्षाओं को देखेंगे; और दूसरा, हम

प्रेरित पौलुस की शिक्षाओं को देखेंगे। आइए पहले हम देखते हैं कि पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे यीशु का क्या कहना था।

यीशु की शिक्षाएँ

आज हमारे लिए पुराने नियम के महत्व के बारे में यीशु ने जो सिखाया उसके एक सन्तुलित विचार को पाने के लिए, हम यीशु की शिक्षाओं के दो पहलुओं को संक्षेप में देखेंगे: पहला, पुराने नियम के बारे में उसकी प्रत्यक्षत: नकारात्मक टिप्पणियाँ और दूसरा, पुराने नियम की प्रासंगिकता की उसकी सकारात्मक पुष्टियाँ। आइए पहले हम यीशु की कुछ शिक्षाओं को देखते हैं जो पहली नजर में पुराने नियम के बारे में एक नकारात्मक विचार को प्रस्तुत करती प्रतीत होती हैं।

नकारात्मक टिप्पणियाँ

बहुत से मसीही जो मानते हैं कि यीशु ने पुराने नियम की प्रासंगिकता को समाप्त कर दिया वे अपने इस विचार के प्रमाण के लिए मत्ती 5 से 7 अध्यायों में पहाड़ी उपदेश की ओर मुड़ते हैं। अपने पहाड़ी उपदेश में एक बिंदु पर यीशु ने कई नैतिक मुद्दों को छुआ, और इन विषयों पर उसकी बातचीत से कई लोगों को लगा कि उसने वास्तव में पुराने नियम की शिक्षाओं का विरोध किया था। निम्नलिखित परिचित पद्यांशों को देखें। मत्ती 5:21 और 22 में हम हत्या के बारे में इन वचनों को पढ़ते हैं:

> “तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि “हत्या न करना’ और “जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।’ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।” (मत्ती 5: 21-22)

मत्ती 5:27 और 28 में यीशु ने व्यभिचार के बारे में इस प्रकार कहा:

> “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, “व्यभिचार न करना।’ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।” (मत्ती 5:27-28)

मत्ती 5:31 और 32 में उसने तलाक के बारे में कहा:

> “यह भी कहा गया था, “जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे, तो उसे त्यागपत्र दे।’ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।” (मत्ती 5:31-32)

मत्ती 5:33 और 34 में भी हम इसी प्रारूप को देखते हैं जब यीशु शपथ के बारे में कहता है:

> “फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, “झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिए अपनी शपथ को पूरी करना।’ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना।” (मत्ती 5:33-34)

यीशु ने मत्ती 5:38 और 39 में बदले के बारे में भी कहा:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।" (मत्ती 5:38-39)

और अन्ततः, मसीह मत्ती 5:43 और 44 में शत्रुओं से प्यार करने के बारे में इस प्रकार कहता है:

> "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो।" (मत्ती 5:43-44)

अब, मसीह के सारे अनुयायियों को सहमत होना चाहिए कि यीशु परमेश्वर का सर्वोच्च प्रकाशन है और उसकी शिक्षाएँ पुराने नियम की शिक्षाओं से कहीं अधिक पूर्ण हैं। उसने हृदय को छेदा और क्षितिज में इतनी दूर तक पहुँचा जहाँ पुराना नियम कभी नहीं पहुँचा। परन्तु दुर्भाग्यवश, बहुत से मसीही समझते हैं कि ये पद सिखाते हैं कि हत्या, व्यभिचार, तलाक, शपथ, प्रतिशोध, और शत्रुओं से प्रेम करने पर यीशु के ये विचार वास्तव में पुराने नियम की शिक्षाओं के विपरीत हैं। उनका तर्क सामान्यत: इस प्रकार जाता है: वे कहते हैं कि पुराने नियम ने सिखाया कि शारीरिक हत्या पाप है, परन्तु यीशु ने घृणा से भरे हुए हृदय की ओर ध्यान खींचा। पुराने नियम ने शारीरिक व्यभिचार की मनाही की, परन्तु यीशु आगे बढ़कर हृदय के व्यभिचार के बारे में बात करता है। तलाक के संबंध में, बहुत से लोगों का विश्वास है कि पुराने नियम ने कारणों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए तलाक की अनुमति दी, जबकि यीशु ने पुराने नियम की इस शिक्षा से असहमति जताई और तलाक के एकमात्र आधार के रूप में लैंगिक अनैतिकता पर बल दिया। शपथ के संबंध में, वे तर्क देते हैं कि पुराने नियम ने शपथ को न तोड़ने के बारे में कहा है, परन्तु यीशु ने अपने अनुयायियों को कभी शपथ न खाने का निर्देश दिया। यही व्याख्याकार अक्सर मानते हैं कि पुराने नियम ने व्यक्तिगत प्रतिशोध-"आँख के बदले आँख" का समर्थन किया-परन्तु यीशु ने सिखाया कि हमें क्षमा करना चाहिए। उनका अनुमान है कि पुराने नियम ने पड़ोसियों से प्रेम करना और शत्रुओं से घृणा करना सिखाया, परन्तु यीशु ने आज्ञा को शत्रुओं से भी प्रेम करने तक बढ़ा दिया।

अब यदि यीशु की शिक्षाओं की यह प्रचलित समझ कहीं भी सत्य के निकट है, तो हमारे पास यह सोचने का अच्छा कारण है कि यीशु अपने अनुयायियों को पुराने नियम के नैतिक अधिकार से मुक्त करने के लिए आया। परन्तु जब हम इस बात पर अधिक निकटता से विचार करते हैं कि यीशु ने मत्ती 5 में वास्तव में क्या कहा तो हमें जल्द ही पता चलता है कि यह दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। यद्यपि यीशु का प्रकाशन पुराने नियम के प्रकाशन से कहीं अधिक महान है, परन्तु उसने किसी भी तरह पुराने नियम की शिक्षाओं का खण्डन नहीं किया। इसके विपरीत, उसका अभिप्राय पुराने नियम की कुछ सामान्य गलतफहमियों का खण्डन करने के द्वारा उसकी पुष्टि करना था।

यीशु को उचित रूप में समझने के लिए, हमें यह देखने की आवश्यकता है कि मत्ती 5 में यीशु पुराने नियम से असहमति नहीं जता रहा था। इसके विपरीत, उसने शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा पुराने नियम की व्याख्या करने के तरीकों पर आपत्ति की। यीशु के दिनों में, बहुत कम लोगों की बाइबल तक प्रत्यक्ष पहुँच थी, और इस कारण, इस्राएल में साधारण लोग पूरी तरह अपने धार्मिक अगुवों की शिक्षाओं पर निर्भर थे। जब यीशु ने मत्ती 5 में विरोधाभास को प्रकट किया जिसे हमने अभी पढ़ा है, उसने अपने विचारों, जो पुराने नियम के साथ सामंजस्यपूर्ण थे, की तुलना उन परम्पराओं से की जिसे शास्त्रियों और फरीसियों ने पुराने नियम में जोड़ दिया था। कई विवरण इस बात को साबित करते हैं कि मुद्दा यही था।

पहले, हमें ध्यान देना चाहिए कि यीशु ने उन बातों के बारे में कहा जो कही और सुनी गई थीं। अन्य शब्दों में, उसका ध्यान पुराने नियम की अपेक्षा मौखिक परम्पराओं पर था। जब यीशु और नये नियम के अन्य व्यक्ति पुराने नियम के बारे में बताते थे, तो वे जो "लिखा" या "पढ़ा गया," उसके बारे में बात

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

करते थे। और नये नियम में कहीं भी यीशु ऐसी किसी भी बात का खण्डन नहीं करता है जिसका इस प्रकार परिचय कराया गया हो। परन्तु पहाड़ी उपदेश में, उसने लोगों से जो "कहा गया था" उस पर आपत्ति की, उसने उस पर आपत्ति की जो उन्होंने "सुना था।" आसान शब्दों में, यीशु ने अपने शब्दों की तुलना उस से की जो शास्त्री और फरीसी कह रहे थे। यीशु पुराने नियम में जो लिखा था उस से असहमत नहीं था, परन्तु इस्राएल में अन्य शिक्षकों द्वारा प्रसारित की जा रही मौखिक परम्पराओं से असहमत था। इसीलिए उसने बार-बार लिखे हुए की अपेक्षा कहे हुए के बारे में बात की।

इस प्रकाश में, हमें इस बात को और अधिक निकटता से देखना चाहिए कि यीशु ने पुराने नियम की इन मौखिक व्याख्याओं के बारे में वास्तव में क्या कहा। आइए हम यीशु द्वारा की गई तुलना को देखते हैं।

हत्या के मुद्दे के संबंध में, यद्यपि बहुत से लोग मानते हैं कि यीशु ने हत्या की मनाही को विस्तार देकर घृणा को उसमें शामिल किया, परन्तु इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम ने न केवल हत्या की निन्दा की, बल्कि परमेश्वर के लोगों के बीच फूट की भी निन्दा की। परमेश्वर के लोगों के बीच सामंजस्य और शान्ति के पुराने नियम के आदर्श को भजन 133:1 में अच्छी तरह अभिव्यक्त किया गया है:

> देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें। (भजन 133:1)

यीशु के समय में प्रचलित परम्पराओं में फूट तब तक माफ थी जब तक कि वह हत्या की ओर न ले जाए। इसके विपरीत, यीशु ने पुराने नियम के वास्तविक प्रमापों पर बल देने के द्वारा इस गलत शिक्षा का खण्डन किया। और उसने हत्या की मनाही को घृणा की मनाही के साथ मिलाकर ऐसा किया।

व्यभिचार के संबंध में, बहुत से लोग मानते हैं कि यीशु ने व्यभिचार के विरूद्ध मनाही को विस्तार देकर हृदय के व्यभिचार को उसमें शामिल किया। परन्तु एक बार फिर, यह देखना आसान है कि यीशु पुराने नियम की मांगों से असहमत नहीं था या उसने उन में विस्तार नहीं किया। आखिर, पुराना नियम परमेश्वर के लोगों से केवल शारीरिक व्यभिचार से ही दूर रहने की मांग नहीं करता था, इसमें लालच, या हृदय के व्यभिचार की भी मनाही थी। जैसा हम निर्गमन 20:17 में पढ़ते हैं:

> "तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास-दासी या बैल-गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना। (निर्गमन 20:17)

दसवीं आज्ञा स्पष्ट रूप से किसी की पत्नी का लालच करने से मना करती है। अत:, हम देखते हैं कि यीशु का तर्क पुराने नियम की व्यवस्था का इनकार नहीं, पुराने नियम की व्यवस्था का पुन: दावा करना है।

तलाक के संबंध में, एक बार फिर बहुत से व्याख्याकारों का मानना है कि यीशु पुराने नियम से असहमत था। परन्तु हमें समझना है कि यीशु के समय में इस्राएल में बहुत से धार्मिक अगुवे मानते थे कि पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार उन्हें यह अधिकार था कि वे उचित कानूनी कागजात देकर अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकते थे। परन्तु हम सब जानते हैं कि पुराना नियम स्पष्ट संकेत देता है कि परमेश्वर ऐसे व्यवहार का अनुमोदन नहीं करता है। जैसा मलाकी 2:16 कहता है:

> इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, "मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ। (मलाकी 2:16)

मत्ती अध्याय 19 में, 3 से 9 पदों में यीशु तलाक पर अपने विचार का विस्तार से वर्णन करता है, और वहाँ उसने स्पष्ट किया कि उसके द्वारा तलाक का विरोध पुराने नियम, विशेषत: आदम और हव्वा की सृष्टि के अभिलेख पर आधारित है।

शपथ के संबंध में, बहुत से लोग सोचते हैं कि यीशु ने शपथ लेने के पुराने नियम के रिवाज पर आपत्ति की। परन्तु एक बार फिर, यीशु पुराने नियम की शिक्षाओं का विरोध नहीं कर रहा था, परन्तु उसकी शिक्षाओं की विकृतियों का विरोध कर रहा था। यीशु के समय में कुछ लोग सिखाते थे कि झूठ बोलना तब तक सही था जब तक कि व्यक्ति ने अपने वचन को पूरा करने की शपथ न खाई हो। यीशु ने इस शिक्षा से असहमति जताई और बल दिया कि पुराने नियम में हर झूठ निषेध है, न कि केवल वह झूठ का जिस से शपथ का उल्लंघन होता है। जैसा हम नीतिवचन 6:16 और 17 में पढ़ते हैं:

> छः वस्तुओं से यहोवा बैर करता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है: अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलने वाली जीभ...(नीतिवचन 6:16-17)

इसी कारण मत्ती 5:37 में यीशु ने कहा:

> "तुम्हारी बात "हाँ' की "हाँ,' या "नहीं' की "नहीं' हो। (मत्ती 5:37)

यीशु पुराने नियम से असहमत नहीं था, परन्तु उसने दिखाया कि शास्त्रियों और फरीसियों की मौखिक परम्पराएँ पुराने नियम के प्रमापों के अनुरूप नहीं थी।

बदले के संबंध में, बहुत से लोग मानते हैं कि पुराना नियम बदले की अनुमति देता था और यीशु ने इसकी अनुमति नहीं दी। परन्तु निर्गमन 21:24 में "आँख के बदले आँख" का पुराने नियम का कानून मूलत: इस्राएल के न्यायालयों में न्यायियों के मार्गदर्शन के लिए था। न्यायियों को अपना निर्णय और दण्ड निष्पक्षता से और किए गए अपराध के अनुपात में देना था। यह प्रमाप कभी भी व्यक्तिगत संबंधों में लागू करने के लिए नहीं था। इसके विपरीत, पुराने नियम ने सिखाया कि उन सन्दर्भों में दया और करूणा का व्यवहार किया जाना था। जैसा हम लैव्यवस्था 19:18 में पढ़ते हैं:

> "पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना... मैं यहोवा हूँ। (लैव्यवस्था 19:18)

यीशु के समय में "आँख के बदले आँख" को व्यक्तिगत बदले के लिए परमेश्वर की स्वीकृति के रूप में मान लिया गया था। यह माना जाता था कि हर बार जब भी कोई आपके विरूद्ध कुछ करता है, तो आपको बदले में उसकी उतनी ही हानि करने का अधिकार है। परन्तु यीशु ने व्यवस्था की इस विकृति से असहमति जताई और पुराने नियम की शिक्षा की पुष्टि की कि हमें व्यक्तिगत संबंधों में दया दिखानी है।

अन्ततः, शत्रुओं से प्रेम के संबंध में, बहुत से लोगों का यह गलत विश्वास है कि पुराने नियम की शिक्षा है कि शत्रुओं से घृणा करना स्वीकार्य है। यीशु के समय में कुछ शिक्षकों ने लैव्यवस्था 19:18 में "अपने पड़ोसी से प्रेम रखने" की आज्ञा से यह मतलब निकाला कि "शत्रुओं से घृणा करना" भी उतना ही उचित था। परन्तु, निस्सन्देह, पुराना नियम ऐसा कुछ भी नहीं कहता है। वास्तव में, निगर्मन 23:4 में हम शत्रुओं से व्यवहार करने के बारे में इन निर्देशों को पढ़ते हैं:

> "यदि तेरे शत्रु का बैल या गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना। (निर्गमन 23:4)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अतः, एक बार फिर, यीशु ने अपने विचारों के द्वारा पुराने नियम का विरोध नहीं किया। इसके विपरीत, उसने अपने समय की गलत व्याख्या का विरोध किया और पुराने नियम की सच्ची शिक्षाओं पर बल दिया।

यदि हम कल्पना करते हैं कि यीशु ने पुराने नियम के विरूद्ध कुछ सिखाया तो यह उसकी शिक्षा के बारे में गम्भीर गलतफहमी है। अब, जैसा हम देखेंगे, यीशु ने अक्सर प्रकट किया कि पुराना नियम किस ओर अग्रसर था, और उसने उन विश्वासों और व्यवहारों का वर्णन किया जिसकी इसे अपेक्षा थी, और इस अर्थ में उसकी शिक्षाएँ परमेश्वर के स्वभाव और अपने लोगों के लिए उसकी इच्छा के बारे में और अधिक प्रकट करते हुए पुराने नियम की शिक्षाओं से आगे तक गई। परन्तु यीशु ने कभी पुराने नियम या उसकी शिक्षाओं का विरोध नहीं किया। इसके विपरीत, उसने पुराने नियम की गलत व्याख्याओं का विरोध किया।

पुराने नियम के बारे यीशु की प्रथम दृष्टया नकारात्मक टिप्पणियों को देखने के बाद जो यथार्थ में उसका पुष्टिकरण थीं, अब हमें उन पद्यांशों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें यीशु द्वारा अपने अनुयायियों के लिए पुराने नियम के अधिकार और उसकी प्रासंगिकता की पुष्टि को देखना तुलनात्मक रूप से आसान है।

सकारात्मक पुष्टियाँ

सामान्य अर्थों में, पुराने नियम के पवित्र वचनों के बारे में यीशु के सकारात्मक दृष्टिकोण को हम कई प्रकार से देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, उसने अपनी शिक्षाओं के आधार के रूप में निरन्तर उनका हवाला दिया; उसने रूपान्तरण के पहाड़ पर व्यवस्था देने वाले मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के मुखिया एलिय्याह के बीच खड़े होकर अपनी महिमा को प्रदर्शित किया; अपने जीवन भर, यीशु ने पूरे मन से पुराने नियम की शिक्षाओं को माना।

परन्तु पुराने नियम के प्रति यीशु के सकारात्मक विचार के विशिष्ट उदाहरणों के लिए, हम एक बार फिर पहाड़ी उपदेश को देखेंगे। देखें यीशु मत्ती 5:17 और 18 में क्या कहता है:

> "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्द्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दू भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।" (मत्ती 5:17-18)

यहाँ पर यीशु ने बल देकर कहा कि वह व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने नहीं आया था। उसने बल दिया कि पुराने नियम का प्रत्येक विवरण, यहाँ तक कि एक मात्रा या बिन्दू भी, अन्त के समय तक प्रभावी रहेगा।

दुर्भाग्यवश, मसीही कई बार सोचते हैं कि यीशु ने वास्तव में जो कहा है उससे उसका अर्थ बिलकुल विपरीत है। वे पढ़ते हैं, "मैं लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ," और वे सोचते हैं कि यीशु का मतलब कुछ इस प्रकार था, "मैं (पुराने नियम को) लोप करने नहीं परन्तु उसे अप्रासंगिक बनाने आया हूँ।" परन्तु आगे मत्ती 5:19 में यीशु ने जो कहा उन शब्दों को देखने से हमें पता चलता है कि यीशु का मतलब यह नहीं था। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।" (मत्ती 5:19)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ध्यान दें यीशु यहाँ क्या कहता है। यदि लोग छोटी से छोटी आज्ञाओं को भी, मानने में असफल हो जाएँ, या वे दूसरों को उन्हें अनदेखा करना सिखाएँ, तो वे स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटे होंगे। यीशु जानता था कि शास्त्री और फरीसी पुराने नियम में से आज्ञाओं को छाँटकर मानते थे। इसलिए, उसने बल दिया कि उसके चेले सम्पूर्ण पुराने नियम की हर बात को पूरा करें, न कि केवल उसके कुछ चुने हुए भागों को। मसीह ने अपने विश्वासियोग्य अनुयायियों से यह अपेक्षा रखी कि वे पुराने नियम के पवित्र वचनों के हर विवरण के प्रति समर्पित हों। वास्तव में, उसे पुराने नियम के अधिकार के बारे में इतना दृढ़ निश्चय था कि उसने बल देकर कहा कि हम शास्त्रियों और फरीसियों से अच्छी नियति की आशा केवल तभी कर सकते हैं जब हम सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रति समर्पित हों। जैसा यीशु ने मत्ती 5:20 में बताया:

> "क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे। (मत्ती 5:20)

अब, हम सबको यह मानना होगा कि यीशु के ये वचन हर प्रकार के व्यवहारिक प्रश्नों को उठाते हैं। आधुनिक युग में पुराने नियम की शिक्षाओं के प्रति समर्पित होने का क्या अर्थ है? आज मसीहियों को पुराने नियम की छोटी से छोटी आज्ञाओं को किस प्रकार मानना चाहिए? ये वे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन्हें हम इस श्रृंखला में देखेंगे, परन्तु इस समय हमारे लिए केवल उस मूलभूत सिद्धान्त पर बल देना पर्याप्त होगा जिसे यीशु ने इतनी सरलता से सिखाया। यीशु ने अपने अनुयायियों से पुराने नियम को परमेश्वर के अधिकृत वचन के रूप में ग्रहण करने को कहा। उन्हें उसे अप्रासंगिक होने के कारण त्यागना नहीं था, परन्तु उन्हें इसके प्रत्येक आयाम को सीखना और मानना था।

पौलुस की शिक्षाएँ

अब जबकि हम देख चुके हैं कि किस प्रकार यीशु ने हमें सिखाया कि पुराना नियम मसीही जीवन के लिए प्रासंगिक है, तो हमें संक्षेप में प्रेरित पौलुस की गवाही को देखना चाहिए। पुराने नियम के उसके समर्थन को समझने के लिए, पुराने नियम पर उसकी टिप्पणियों को हम उसी प्रकार अनुसन्धान करेंगे जिस प्रकार हमने यीशु के वचनों की जाँच की थी। पहले, हम पुराने नियम की व्यवस्था के बारे में पौलुस की प्रथम दृष्टया नकारात्मक टिप्पणियों को देखेंगे, और फिर, हम पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में उसकी सकारात्मक पुष्टियों पर विचार व्यक्त करेंगे। आइए पहले हमें पुराने नियम पर पौलुस के कुछ प्रथम दृष्टया नकारात्मक विचारों को देखते हैं।

नकारात्मक टिप्पणियाँ

दुःखद रूप से, बहुत से मसीही आज विश्वास करते हैं कि पौलुस वास्तव में पुराने नियम के प्रति बहुत नकारात्मक था। ये निष्कपट मसीही पौलुस की पत्रियों में बहुत से पद्यांशों के बारे में बताते हैं, परन्तु हमारी चर्चा के लिए हम केवल एक उदाहरण को लेंगे। गलातियों 3:1-5 में इन पदों को देखें:

> हे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारे तो मानो आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया। मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? क्या तुम ने इतना दुःख व्यर्थ ही उठाया? परन्तु कदाचित् व्यर्थ नहीं। जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है? (गलातियों 3:1-5)

अब हमें यह मान लेना चाहिए कि पौलुस का विश्वास था कि मसीह ने परमेश्वर और उसकी इच्छा को पुराने नियम से बढ़कर प्रकट किया था। उसका विश्वास था कि नये नियम का विश्वास पूर्ण प्रकाशन था। परन्तु अक्सर, अच्छे मसीही इस प्रकार के पद्यांशों को पढ़कर सोचते हैं कि पौलुस पुराने नियम को अप्रासंगिक मानता था। परन्तु वास्तव में, पौलुस ने पुराने नियम की प्रासंगिकता का इनकार नहीं किया; उसने केवल पुराने नियम के दुरूपयोग का विरोध किया।

विशेषत:, पद दो में, पौलुस ने पूछा कि गलातियों ने पवित्र आत्मा को पुराने नियम की व्यवस्था के द्वारा पाया था या विश्वास के द्वारा। पद 3 में वह उनकी निर्भरता के बारे में पूछता है। क्या आत्मा में शुरू करने के बाद अब वे मानवीय प्रयास पर भरोसा करना शुरू करेंगे? और पद 5 में उसने पूछा कि आत्मा के आश्चर्यकर्म व्यवस्था के पालन के कारण हुए या सुसमाचार पर विश्वास करने के कारण। प्रत्येक दशा में, पौलुस का कहना यह था कि मसीही विश्वास की आशीषें व्यवस्था को मानने से नहीं बल्कि यीशु मसीह के सुसमाचार में विश्वास के द्वारा मिली थीं।

पौलुस की पत्रियों में ऐसे कथनों के कारण बहुत से लोग सोचते हैं कि पौलुस ने पुराने नियम की प्रासंगिकता और अधिकार को अस्वीकार किया और उसे मसीही विश्वास और पवित्र आत्मा से बदल दिया। वास्तव में, तर्क अक्सर यह होता है, कि पुराने नियम को दैनिक मसीही जीवन के लिए प्रासंगिक मानने का अर्थ है सुसमाचार से फिरना।

परन्तु, जब हम इन पदों के सन्दर्भ को सावधानी से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि यीशु के समान ही, पौलुस भी पुराने नियम के विरूद्ध नहीं था। वह इसके दुरूपयोग के विरूद्ध था। वह विधिवादी धर्म के स्रोत के रूप में पुराने नियम के दुरूपयोग के विरूद्ध दृढ़ता से खड़ा रहा, उस धर्म के विरूद्ध जिसके अनुसार उद्धार अच्छे कार्यों से मिलता था। इस पद्यांश में, पौलुस ने उन शिक्षकों का विरोध किया जो गलातियों को इस गलत शिक्षा के द्वारा व्यवस्था के दण्ड के अधीन ले आए कि उद्धार को व्यवस्था के पालन के द्वारा अर्जित किया जाता था। और इस झूठी शिक्षा के विपरीत, पौलुस ने पुष्टि की कि मसीह का सुसमाचार पुराने नियम की सच्ची शिक्षा के साथ सामंजस्यपूर्ण है। देखें पौलुस बाद में गलातियों 3 में किस प्रकार इस परिस्थिति के बारे में बताता है। 10 से 13 पदों में हम पढ़ते हैं:

> इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, “जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों को करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।” पर यह बात प्रकट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। पर व्यवस्था का विश्वास से कोई संबंध नहीं; क्योंकि “जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।” मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, “जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।” (गलातियों 3:10-13)

जैसा यह पद्यांश स्पष्ट करता है, पौलुस ने उनका विरोध किया जो अपने उद्धार के लिए व्यवस्था के पालन पर भरोसा करते थे। उसने उनका विरोध किया जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते थे। यदि यह हमारा धार्मिक व्यवहार है, तो हम शापित हैं क्योंकि हमारा आज्ञापालन कभी सिद्ध नहीं होगा। इस शाप से बचने का एकमात्र मार्ग मसीह में विश्वास करना है जिसने हमारे शाप को अपने ऊपर ले लिया।

परन्तु क्या पौलुस ने पुराने नियम का विरोध किया? क्या उसने पुराने नियम की सच्ची शिक्षा को मसीहियों के लिए अप्रासंगिक माना? बिल्कुल नहीं। वास्तव में, पौलुस ने पुराने नियम के द्वारा यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रमाणित किया कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है। गलातियों 3:11 में वह हबक्कूक 2:4 से उद्धृत करता है जहाँ भविष्यद्वक्ता ने घोषणा की:

> धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा। (हबक्कूक 2:4)

पौलुस के अनुसार, केवल विश्वास के द्वारा उद्धार का मसीही सुसमाचार वास्तव में पुराने नियम की शिक्षा के अनुसार सत्य था।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि पुराने नियम के बारे में पौलुस की प्रथम दृष्टया नकारात्मक टिप्पणियाँ वास्तव में कार्य संबंधी धार्मिकता की प्रणाली के रूप में पुराने नियम के दुरूपयोग के प्रति नकारात्मक टिप्पणियाँ थीं, यह हमें इस बात को देखने में सहायता करेगा कि प्रेरित ने मसीह के अनुयायियों के लिए पुराने नियम के अधिकार और प्रासंगिकता की दृढ़ता से पुष्टि की।

सकारात्मक पुष्टियाँ

सामान्य अर्थों में, पौलुस ने वास्तव में अपने स्वयं के धर्मविज्ञान को सही ठहराने के लिए अनगिनत बार पुराने नियम का प्रयोग किया। पुराने नियम के उद्धरण और संकेत उसकी सारी पत्रियों में हैं। परन्तु अधिक स्पष्ट रूप में, पौलुस ने यह भी सिखाया कि मसीहियों को पुराने नियम को अपने जीवनों के लिए बहुत प्रासंगिक मानना चाहिए। रोमियों 15:4 में उसके वचनों पर ध्यान दें:

> जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें। (रोमियों 15:4)

इस पद्यांश के अनुसार, हमारी मसीही आशा को विकसित करने और बनाए रखने के लिए पुराना नियम आवश्यक है। जब हम पुराने नियम की कहानियाँ, भजन, वायदों और दण्ड के बारे में पढ़ते हैं, तो मसीह में हमारी आशा बढ़ेगी।

परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में पौलुस की सबसे दृढ़ और स्पष्ट पुष्टि 2 तीमुथियुस 3:16 और 17 में है:

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। (2 तीमुथियुस 3:16)

अधिकाँश मसीही इस पद से परिचित हैं, परन्तु हम अक्सर कल्पना करते हैं कि “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र” शब्द नये नियम को बताते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इन शब्दों के नये नियम के हमारे दृष्टिकोण के लिए निहितार्थ हैं, परन्तु जब पौलुस ने कहीं और तीमुथियुस को “पवित्रशास्त्र” के बारे में लिखा, तो उसके मन में विशेष रूप से पुराना नियम था। इसलिए, उन अद्‌भुत बातों को सुनें जो पुराना नियम हमें दे सकता है। पुराना नियम उपदेश देने, समझाने, सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। एक शब्द में, पौलुस ने कहा कि पुराना नियम इतना प्रासंगिक है कि यह मसीही जीवन के लिए अपरिहार्य है।

इसलिए, जब हम पुराने नियम के अपने अध्ययन को शुरू करते हैं, तो हमें केवल अपने और पुराने नियम के बीच की दूरी को ही नहीं मानना है। हमें यह भी देखना है कि नया नियम हमें बुलाता है कि हम आज पुराने नियम की प्रासंगिकता के बारे में ऊँची अपेक्षाएँ रखें। पुराने नियम का अध्ययन करना किसी अप्रचलित वस्तु पर समय लगाना नहीं है; पुराने नियम के अध्ययन का अर्थ ऐसी पुस्तक का अध्ययन करना है जो हमें उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमारे अध्याय में इस बिन्दू पर, हम अपने तीसरे मुख्य शीर्षक पर आते हैं: अपने समय में पुराने नियम को कैसे लागू किया जाए।

हमारे लिए प्रयोग

इस अध्याय में हमारे संक्षिप्त विचार-विमर्श से, यह व्यक्त हो जाना चाहिए कि पुराने नियम को समझने और लागू करने का कार्य विशाल है। अब, यह जानना एक अद्‌भुत राहत है कि पवित्र आत्मा पुराने नियम को पढ़ने और लागू करने में मसीह के अनुयायियों की सहायता करता है। वास्तव में, वह जिस प्रकार हमारी अगुवाई करता और हमें सिखाता है वह हमारी अपनी सामर्थ से हम जो कुछ कर सकते हैं उस से कहीं परे है। परन्तु यह चाहे आश्वासन देने वाला हो, लेकिन हमें स्वयं को इस अपेक्षा के साथ आत्मसन्तुष्ट नहीं होने देना है कि पवित्र आत्मा सारे कार्य को कर लेगा। इसके विपरीत, यह परमेश्वर के सम्मुख हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उत्तरदायित्वपूर्ण तरीकों से पुराने नियम को लागू करने की रीतियों को सीखने की चुनौती को समझें और स्वीकार करते हुए अपना सर्वोत्तम करें। प्रेरित पौलुस 2 तीमुथियुस 2:15 में तीमुथियुस को इस जिम्मेदारी के बारे में बताता है:

> अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

आधुनिक मसीहियों के लिए पुराने नियम के प्रयोग का अनुसंधान करने हेतु हम तीन बिन्दुओं को देखेंगे: पहला, वह चुनौती जिसका पुराने नियम को लागू करने का प्रयास करते समय हम सामना करते हैं; दूसरा, वे संबंध जो इतनी पुरानी पुस्तक को हमारे समय में लागू करना संभव बनाते हैं; और तीसरा, वे विकास जिनका पुराने नियम को लागू करते समय हमें ध्यान रखना है।

चुनौती

आज हमारे जीवनों में पुराने नियम को समझने और लागू करने का प्रयास करते समय हम किस चुनौती का सामना करते हैं? इस चुनौती का वर्णन करने के कई तरीके हैं, परन्तु हम केवल एक केन्द्रिय विचार पर ध्यान देंगे: हमें यह सीखना है कि हमारे और पुराने नियम के बीच की खाई को कैसे दूर किया जाए। हमें सीखना है कि उस दूरी को कैसे समाप्त किया जाए जो हमें पुराने नियम से अलग करती है ताकि हम आज अपने लिए उसकी प्रासंगिकता का लाभ उठा सकें।

आइए इस विषय को जितना हो सके सरलता से बताएँ। जैसा हमने देखा है, परमेश्वर ने बहुत समय पहले रहने वाले अपने लोगों को पुराना नियम दिया ताकि वे अपने समय में उसके लिए जी सकें। परन्तु साथ ही हमने यह भी देखा, कि उसने हमें पुराना नियम दिया कि हम भी उसके द्वारा जी सकें। परन्तु हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो पुराने नियम से बहुत अलग है। अत:, इस कारण, हमारे और पुराने नियम के बीच एक अन्तराल है, एक बड़ी खाई, जो हमारे लिए यह जानना कठिन बना देती है कि पुराने नियम को अपने जीवनों में कैसे लागू किया जाए। अत:, यदि हमें अपने समय में पुराने नियम को एक जिम्मेदार रीति से लागू करना है, तो हमें तीन बातों को सुलझाना होगा। पहला, हमें उस प्राचीन संसार को समझना होगा जिसे मूल रूप से पुराना नियम दिया गया था। हमें अपने संसार की पुराने नियम से भिन्नताओं पर ध्यान देते हुए, हमारे और पुराने नियम के बीच की ऐतिहासिक दूरी को पार करना होगा। और तीसरा, पुराने नियम में

हम जो कुछ सीखते हैं उसे अन्तराल के इस तरफ लाकर अपने और आज के दूसरे लोगों के जीवनों में लागू करना होगा।

देखें पौलुस 1 कुरिन्थियों 10:11 में प्रयोग की चुनौती को किस प्रकार संक्षेप में बताता है। इस्राएल के मिस्र से निर्गमन के पुराने नियम के वर्णनों के बारे में बताते हुए, पौलुस ने कहा:

> परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं। (1 कुरिन्थियों 10:11)

अब ध्यान दें कि पौलुस ने यहाँ कम से कम तीन बातें कही हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। पहली, उसने घटनाओं और लेखों के बारे में कहा "ये सब बातें जो उन पर पड़ीं... लिखी गई हैं।" दूसरा, पौलुस ने अपने और कुरिन्थ के अपने साथी मसीहीयों के बारे में कहा, जब उसने कहा, "वे हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं।" और तीसरा, पौलुस ने कुरिन्थियों एवं प्राचीन घटनाओं तथा लेखों के बीच एक अन्तराल का संकेत दिया जब उसने मसीहियों को के ऐसे लोग कहा जो "जगत के अन्तिम समय में रहते हैं।" ये शब्द संकेत देते हैं कि पौलुस ने स्पष्ट रूप से यह समझ लिया था कि नये नियम के विश्वासी पुराने नियम के विश्वासियों से अलग समय में रहते हैं। हम अन्तिम समय में हैं, इतिहास के पूर्ण होने के समय में। प्रेरित के इन शब्दों से, हम देखते हैं कि प्रयोग की चुनौती यह है कि हमें उस प्राचीन संसार और हमारे आधुनिक संसार के बीच समय के अन्तराल से निपटने के लिए तैयार रहना है।

सबसे पहले, आज पुराने नियम के उचित प्रयोग में हमारे अपने संसार को पीछे छोड़ना शामिल है। हमारे मुख्य कार्यों में से एक पुराने नियम की इसके अपने शब्दों में व्याख्या करना है। अब, निस्सन्देह कोई भी इसे सिद्ध रूप से नहीं कर सकता है। हम अपने आधुनिक दृष्टिकोणों से पूर्णत: बाहर नहीं निकल सकते हैं। परन्तु, हम सब एक प्राचीन पुस्तक के प्रत्यक्ष रूप से हमारे लिए लिखी होने का दिखावा करने और ईमानदारी से उस पुस्तक को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भ में पढ़ने का प्रयास करने के बीच के अन्तर को जानते हैं। पुराने नियम के प्रत्येक गम्भीर विद्यार्थी को इस तथ्य से जूझना होगा कि हम एक ऐसी पुस्तक को पढ़ और लागू कर रहे हैं जिसे विशिष्ट रूप से उन लोगों के लिए लिखा गया था जो हजारों वर्ष पूर्व रहते थे। एक बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ में, हम परमेश्वर और उसके द्वारा प्रेरित लेखकों को हम से प्रत्यक्ष रूप में बातें करते हुए नहीं सुन रहे हैं; हम उन्हें दूसरों से बातें करते हुए सुन रहे हैं।

इस कारण, हमें सर्वदा यह पूछना चाहिए कि इन पवित्र वचनों का मूल रूप में क्या अर्थ था। पुराने नियम के पद्यांशों के मूल अर्थ ने आरम्भिक दिशा को स्थापित किया कि परमेश्वर क्या चाहता था कि उसके लोग पुराने नियम से सीखें। उनकी प्राथमिकताएँ क्या थीं? उनका विश्वास क्या था? उनकी परिस्थितियाँ क्या थीं? उन्होंने पुराने नियम के पद्यांशों को किस प्रकार समझा था? इस श्रृंखला के आगामी अध्यायों में हम पुराने नियम के मूल लेखकों और श्रोताओं के वास्तविक संसार की ओर जाने के द्वारा सीखेंगे कि पुराने नियम को कैसे पढ़ा जाए।

दूसरा, पुराने नियम को उचित रूप से लागू करने के लिए हमें पुराने नियम और हमारे समय के बीच संबंधों के प्रकारों और बाइबल के विश्वास में हुए विकास के समयों को सावधानी से देखना होगा। जैसा हम देखेंगे, पुराने नियम की शिक्षाएँ एक लम्बे समय के दौरान बढ़ी और विकसित हुई। यह इस प्रकार नहीं था कि परमेश्वर ने अपने लोगों से एक बारे कुछ कहा और फिर बाद में उस विषय के संबंध में कभी कुछ नहीं कहा। इसके विपरीत, पुराने नियम और हमारे समय के बीच की खाई के दौरान परमेश्वर ने बहुत अधिक प्रकट किया। इन बढ़े हुए प्रकाशनों में से कुछ पुराने नियम में ही हैं और कुछ नये नियम में आते हैं। परन्तु हर मामले में, खाई को पाटने के लिए हम उस प्रत्येक बात को ध्यान में रखना होगा जो परमेश्वर ने कही है।

तीसरा, लागू करने की चुनौती यह है कि हमें इस विचार के प्रति दृढ़ता से समर्पित होना है कि पुराना नियम भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखकर लिखा गया था। जैसे पौलुस ने कहा है, पुराना नियम हमारे लिए "लिखा गया है।" यह तथ्य आधुनिक संसार में विश्वासियों के रूप में हम से हमारे उत्तरदायित्वों पर ध्यान देने की मांग करता है। आज के समय के परमेश्वर के लोगों की आवश्यकताएँ बहुत कुछ अतीत के लोगों के समान ही हैं, परन्तु वे नई और अलग भी हैं। यदि हम आज पुराने नियम को प्रभावी रूप से लागू करने वाले हैं, तो हमें स्वयं और उन लोगों के बारे में जानकारी होनी चाहिए जिन पर हम इसे लागू करना चाहते हैं।

अब जबकि हम उस चुनौती को देख चुके हैं जिसका हमारे समय में पुराने नियम को लागू करने की इच्छा रखने वाले हर व्यक्ति को सामना करना पड़ता है, तो हमें प्रयोग के विषय में दूसरे बिन्दू पर आना चाहिए: वे कौनसे संबंध हैं जो हमारे लिए पुराने नियम की शिक्षा को ऐतिहासिक अन्तराल के पार आधुनिक संसार में लाना सम्भव बनाते हैं? कौनसी समानताएँ इसे सम्भव बनाती हैं?

संबंध

किसी व्यक्ति के जीवन के लिए किसी पुस्तक की प्रासंगिकता के लिए पाठक और पुस्तक की विषय सूची के बीच कोई संबंध होना चाहिए। पुस्तक को लागू करने योग्य होने के लिए पुस्तक जो कहती है उसके और पाठकों के अपने जीवन के अनुभव में पर्याप्त समानता होनी चाहिए। यह सामान्यत: पुस्तकों के बारे में सत्य है और विशेष रूप में पुराने नियम के बारे में भी सत्य है। अत:, इस बिन्दू पर हमें पूछना है, पुराने नियम के संसार और हमारे संसार के बीच कौनसे संबंध विद्यमान हैं जो इसे आज हमारे जीवनों में लागू करने योग्य या प्रासंगिक बनाते हैं?

इन संबंधों की सारणी बनाने के बहुत से तरीके हैं, परन्तु मैं ने पुराने नियम के मूल श्रोताओं के साथ हमारी तीन समानताओं के बारे में विचार करने को सहायक पाया है। विशेषत:, हमारे पास वही परमेश्वर है, हम उसी संसार में रहते हैं, और हम उसी प्रकार के लोग हैं। आइए हम संबंधों की इन तीन रेखाओं को देखते हैं।

वही परमेश्वर

पहला, जब हम एक साथ मिलकर पुराने नियम को पढ़ते हैं तो हमें सर्वदा इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि नये नियम के मसीहियों का परमेश्वर वही है जिसके बारे में हम पुराने नियम में पढ़ते हैं। विश्वासयोग्य मसीही आज उसी परमेश्वर की आराधना और सेवा करते हैं जिसकी विश्वासयोग्य प्राचीन इस्राएली यीशु के जन्म से पूर्व सेवा करते थे।

उसी परमेश्वर की सेवा करने का तथ्य बहुत महत्वपूर्ण संबंधों को स्थापित करता है क्योंकि पवित्र वचन सिखाता है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय या न बदलने वाला है। वह आज भी वही है जैसा प्राचीन समयों में था। अब यहाँ हमें सावधान होना जरुरी है। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, परंतु कुछ ही बातों में। अपरिवर्तनीयता का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर कुछ नहीं करता; इसका मतलब यह नहीं है कि वह निश्चल है। इसके विपरीत, जैसा पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान सिखाता है, परमेश्वर मुख्यत: तीन प्रकार से अपरिवर्तनीय है। वह अपनी अनन्त सलाह, अपने स्वभाव या गुणों, और अपनी वाचा के वायदों में नहीं बदलता है। आइए हम इन्हें देखते हैं जिनमें परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता सुनिश्चित करती है कि वह आज भी वही है जैसा पुराने नियम के समयों में था।

पहला, परमेश्वर की अनन्त सलाह अपरिवर्तनीय है। अब, बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर ने जो कुछ किया है और परमेश्वर जो कुछ कर रहा है वह एक अपरिवर्तनीय, एकीकृत रूपरेखा का हिस्सा है। जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता यशायाह 46:10 में लिखता है:

> "मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई।" **(यशायाह 46:10)**

इन अध्यायों में हम इस अनन्त योजना के लक्ष्य और दिशा को विस्तार से देखेंगे, परन्तु इस बिन्दू पर यह कहना पर्याप्त है कि परमेश्वर की योजना की अपरिवर्तनीयता हमें सिखाती है कि पुराने नियम में उसके उद्देश्य नये नियम में उद्देश्यों के अनुरूप हैं। हम चाहे कैसी भी भिन्नताओं को देखते हों, दोनों नियम दो अलग-अलग योजनाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, न ही एक-दूसरे का स्थान लेते या विरोध करते हैं। इसके विपरीत, पुराना नियम और नया नियम एक एकीकृत योजना की अवस्थाएँ या चरण हैं जो इतिहास को एक अपरिवर्तनीय लक्ष्य की ओर ले जाती रही है और सदा ले जाती रहेगी।

दूसरा, परमेश्वर अपने स्वभाव या गुणों में भी अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर अपने स्वभाव के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न समयों पर दिखाता है, कभी करूणा की अभिव्यक्ति, कभी क्रोध, परन्तु उसका निरन्तर स्वभाव-या उसकी अनन्त प्रकृति-कभी नहीं बदलती है। देखें इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 1:10-12 में मसीह की अनन्त प्रकृति के बारे में क्या कहता है:

> "हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे तो नष्ट हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे, और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।" **(इब्रानियों 1:10-12)**

और याकूब 1:17 कहता है:

> क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। **(याकूब 1:17)**

हमारा परमेश्वर बदलता नहीं है; इसके विपरीत, उसका स्वभाव सदा एक समान रहता है। दुर्भाग्यवश, हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब बहुत से मसीहियों ने परमेश्वर के स्वभाव की स्थिरता पर सन्देह किया है। वे इस प्रकार दिखाते हैं मानो बाइबल के आरम्भिक भाग में परमेश्वर के एक प्रकार के गुण हों और फिर बाद में अलग प्रकार के गुण। मुझे याद है एक छह वर्षीय बालक के रूप में मैं ने अपनी रविवारीय स्कूल की शिक्षिका को यरीहो में यहोशू के युद्ध के बारे में बताते हुए सुना। कहानी को समाप्त करने के बाद, उन्होंने कमरे में चारों तरफ हम सब पर दृष्टि डाली और कहा, "बच्चो, पुराने नियम में परमेश्वर बहुत अधम था। वह उस समय चाहता था कि बच्चे भी मर जाएँ। परन्तु अब परमेश्वर बदल गया है। नये नियम में वह हर व्यक्ति से प्रेम करता है। क्या आप खुश नहीं हैं कि आप पुराने नियम में नहीं बल्कि नये नियम में रहते हैं? और, निस्सन्देह, हम सब इसके कारण बहुत खुश हैं। हम में से कोई भी नहीं चाहता कि वह यरीहो के बच्चों के समान मरे।

अब, मेरी रविवारीय स्कूल की शिक्षिका निष्कपट थी, परन्तु उन्होंने बहुत गम्भीर गलती की। परमेश्वर का स्वभाव पुराने नियम के बाद से बदला नहीं है। इसके विपरीत, वह नये नियम में न्याय से उतना ही पूर्ण है जितना पुराने नियम में था। और वह पुराने नियम में उतना ही प्रेमी है जितना कि नये नियम में। परमेश्वर का स्वभाव सदा से वैसा ही रहा है और सर्वदा वैसा ही रहेगा जैसा इस समय है। वह अपरिवर्तनीय है।

परमेश्वर के गुणों की अपरिवर्तनीयता हमें यह विश्वास करने का कारण भी देती है कि पुराना नियम आज हमारे जीवनों के लिए प्रासंगिक है। इस तथ्य के बावजूद कि सतही रूप से पुराने नियम में परमेश्वर के बहुत से बाहरी कार्य नये नियम से बहुत अलग दिखते हैं, हमें पवित्र वचन के साथ पुष्टि करनी है कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर का स्वभाव बदला नहीं है। पुराने नियम में किया हुआ उसका प्रत्येक कार्य उसके स्वभाव को प्रतिबिम्बित करता है, और चूंकि उसका स्वभाव बिल्कुल भी बदला नहीं है, इसलिए हम भरोसा कर सकते हैं कि नये नियम के समय में भी उसके कार्य उसके अनन्त स्वभाव के साथ सामंजस्यपूर्ण हैं। यदि पुराने नियम के विश्वासियों और नये नियम के विश्वासियों का परमेश्वर वही है जिसके गुण समान हैं, तो हमें पुराने नियम के विश्वासियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार और नये नियम में विश्वासियों के साथ उसके व्यवहार के बीच भी समानताओं की अपेक्षा रखनी चाहिए। और ये समानताएँ पुराने नियम को हमारे जीवनों के लिए प्रासंगिक बनाती हैं।

अब, तीसरा, सम्पूर्ण बाइबल में अपनी वाचा के वायदों में भी अपरिवर्तनीय है। बिना किसी चूक के परमेश्वर उन सब बातों को पूरा करेगा जिसकी उसने अपने लोगों से करने की वाचा बान्धी है। अब हमें यहाँ भी सावधान रहने की आवश्यकता है। पवित्र वचन में परमेश्वर बहुत बार अपने लोगों को धमकी और प्रस्ताव देता है जिन्हें वह पूरा नहीं करता है-परन्तु धमकियाँ और प्रस्ताव वाचा के वायदे नहीं हैं। वाचा के वायदे वे बातें हैं जिन्हें करने की परमेश्वर ने शपथ खाई है, और वाचा की ये शपथ अचूक हैं। जैसा इब्रानियों 6:17 में लिखा है:

> इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रकट करना चाहा कि उसका उद्देश्य बदल नहीं सकता, तो शपथ को बीच में लाया। (इब्रानियों 6:17)

परमेश्वर अपनी वाचाओं में अपरिवर्तनीय है। उत्पत्ति 9:16 में परमेश्वर ने वायदा किया कि जब कभी वह आकाश में मेघधनुष को देखेगा तो वह नूह के साथ अपनी अनन्त वाचा को स्मरण करेगा और फिर कभी पृथ्वी को जल से नष्ट नहीं करेगा। उत्पत्ति अध्याय 17 में परमेश्वर ने तीन बार वायदा किया कि अब्राहम के साथ उसकी वाचा एक अनन्त वाचा होगी, और 1 इतिहास 16:15-18 में दाऊद ने इस्राएल को वायदे का देश देने की पुरखों से की गई परमेश्वर की अनन्त वाचा को याद किया। 2 शमूएल 23:5 में दाऊद ने बताया कि परमेश्वर ने इस्राएल के सिंहासन पर उसके वंश के दावे के संबंध में उसके साथ एक अनन्त वाचा बान्धी थी। और यद्यपि इस्राएल, यहूदा और दाऊद के घराने की असफलता के कारण उन्हें निर्वासन झेलना पड़ा, परन्तु परमेश्वर ने सर्वदा उनके साथ अपनी वाचा को पूरा किया। यहेजकेल 16: 59 और 60 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> “प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं तेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करूंगा, जैसा तू ने किया है, क्योंकि तू ने तो वाचा तोड़कर शपथ तुच्छ जानी है, तौभी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूंगा, और तेरे साथ सदा की वाचा बान्धूँगा। (यहेजकेल 16: 59-60)

हमें यह मानना होगा कि समय समय पर ऐसा प्रतीत होता है कि नये नियम में परमेश्वर अपने कुछ वायदों को भूल गया है या उन्हें अलग कर दिया है। परन्तु यथार्थ यह है-जब हम इस बात को याद रखते हुए पवित्र वचन को उचित रूप से समझते हैं कि परमेश्वर बदलता नहीं है, तो हम पायेंगे कि वाचा का प्रत्येक वायदा पूरा हो गया है या पूरा होगा। इस कारण, हमारे पास यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि नये नियम के समय में मसीह के अनुयायियों के रूप में पुराना नियम लाभप्रद रीतियों से हम पर लागू किया जा सकता है। परमेश्वर ने पुराने नियम के विश्वासियों से बहुत से वायदे किए, और हम निश्चित हो सकते हैं कि नये नियम में वह उन वायदों को पूरा कर रहा है।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि पुराना नियम और नया नियम इस तथ्य के द्वारा संबंधित हैं कि दोनों नियमों में वही अपरिवर्तनीय परमेश्वर है, तो हमें पुराने नियम के विश्वास और आज के अपने मसीही विश्वास के बीच दूसरे प्रकार के संबंध को देखना चाहिए-यह तथ्य कि हम उसी संसार में रहते हैं।

वही संसार

एक शब्द में, पुराना नियम उसी संसार से आता है और उसी संसार का वर्णन करता है जिस में आज आप और मैं रहते हैं। पुराने नियम के विश्वासियों का विश्वास किसी दूसरे ब्रह्माण्ड में नहीं बढ़ा था। वह यहाँ इस ग्रह पर विकसित हुआ, और इसलिए हमारा उसी इतिहास में हिस्सा है और वैसी ही परिस्थितियाँ हैं। और इन तथ्यों के कारण हमें नये नियम के अपने विश्वास और पुराने नियम के विश्वास के बीच कम से कम दो प्रकार के संबंधों को देखने की अगुवाई मिलनी चाहिए। पहला, पुराना नियम बहुत से सन्दर्भों को बताता है जो हमारे कई वर्तमान अनुभवों को स्पष्ट करते हैं। और दूसरा, पुराना नियम उन परिस्थितियों का वर्णन करता है जो हमारे बहुत से वर्तमान अनुभवों के समानान्तर हैं। आइए हम देखते हैं कि इस बात से हमारा क्या मतलब है कि पुराना नियम हमारे विश्वास के अनुभवों का ऐतिहासिक सन्दर्भ उपलब्ध कराता है।

पुराने नियम की एक सर्वाधिक स्पष्ट लेकिन असाधारण विशेषता है कि यह अनगिनत घटनाओं और शिक्षाओं की सूचना देता है जो नये नियम के समय की घटनाओं और शिक्षाओं की पृष्ठभूमि को बनाते हैं। पुराने नियम की घटनाएँ शून्य में नहीं हुई थीं, वे काल्पनिक नहीं थीं; वे वास्तविक इतिहास में हुई और उन में से बहुत सी घटनाओं ने संसार पर सदा के लिए एक अमिट छाप छोड़ी।

उदाहरण के लिए, निर्गमन की पुस्तक में इस्राएल को दी गई दस आज्ञाएँ नये नियम की नैतिक शिक्षा के लिए आवश्यक सन्दर्भ उपलब्ध कराती हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर के लोगों के लिए स्थायी राज्य के मुखिया के रूप में परमेश्वर द्वारा दाऊद का चुनाव दाऊद के वंशज के रूप में यीशु की वंशावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उपलब्ध कराता है। अपरिचित देशों में इस्राएल के निर्वासन का तथ्य यीशु की इस घोषणा के लिए पृष्ठभूमि उपलब्ध कराता है कि वह बन्दियों को छुटकारा देने के लिए आया है। इस प्रकार की बहुत सी रीतियों में, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उपलब्ध करवाने के कारण, नये नियम में जीने के लिए पुराना नियम प्रासंगिक है।

अब, पुराना नियम इस कारण भी प्रासंगिक है क्योंकि पुराने नियम की घटनाएँ हमारे मसीही विश्वास के समानान्तर हैं। हम सब इस कहावत को जानते हैं कि “इतिहास अपने आप को दोहराता है,” और हम समझते हैं कि बहुत सी घटनाएँ अक्सर बहुत कुछ उन घटनाओं के समान लगती हैं जो इतिहास में हो चुकी हैं।

पुराने नियम के विश्वासियों के समान, हम परमेश्वर द्वारा निर्मित लेकिन पाप में गिरे हुए संसार में रहते हैं। पुराने नियम में विश्वासयोग्य लोगों ने दूसरे लोगों और शैतानी ताकतों का विरोध सहा, और आज हम उसी विरोध को सहते हैं। जय पाने के लिए वे परमेश्वर की सहायता पर निर्भर थे; हम भी उसकी सहायता पर निर्भर हैं। पुराने नियम के संसार और हमारे संसार की समकक्षताएँ व्यापक हैं। सतही असमानताओं से परे देखने पर, हम देख सकते हैं कि हम उन परिस्थितियों में रहते हैं जो बहुत कुछ उनके समान है जिनमें पुराने नियम के लेखक और उनके पाठक रहते थे।

तीसरा, हम पुराने नियम और अपने समय के बीच संबंध को इस तथ्य में भी पा सकते हैं कि हम उसी प्रकार के लोगों से व्यवहार कर रहे हैं।

उसी प्रकार के लोग

यद्यपि पुराने नियम के प्राचीन लोगों और आधुनिक लोगों के बीच बहुत सी सतही असमानताएँ हैं, परन्तु आधारभूत निरन्तरता भी है जो हमें उन लोगों के साथ जोड़ती है जो पुराने नियम के समयों में रहते थे। कम से कम तीन रीतियों में हम उसी प्रकार के लोग हैं: सारे मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप हैं; हम सब पाप में गिरे हुए हैं; और मनुष्य दो भागों में विभाजित हैं: जिनका परमेश्वर के साथ वाचा का संबंध है और जिनका नहीं है।

पहला, सारे मनुष्य, किसी भी समय या स्थान के लोग, परमेश्वर का स्वरूप हैं। यह पुराने नियम और नये नियम की स्पष्ट शिक्षा है। उत्पत्ति 1:27 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:27)

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति 9:6 में हम पाते हैं कि पाप द्वारा मानवता को भ्रष्ट करने के बाद भी, मनुष्य अब भी परमेश्वर का स्वरूप हैं। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। (उत्पत्ति 9:6)

और इससे बढ़कर, नया नियम भी पुष्टि करता है कि सारे मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में हैं। याकूब 3:9 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> जीभ से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं। (याकूब 3:9)

और पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:7 में लिखता है:

> पुरूष... परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है। (1 कुरिन्थियों 11:7)

यद्यपि हम बाद के अध्याय में बतायेंगे कि परमेश्वर के स्वरूप में होने का क्या अर्थ है, परन्तु यहाँ यह कहना पर्याप्त होगा कि हम में कुछ विशेषताएँ हैं, जो यदि वैश्विक नहीं, तो कुछ हद तक सारे मनुष्यों में समान हैं। अतीत में, कलीसिया ने इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित किया है कि मनुष्य समझदार है, हम में विशेष भाषाई योग्यताएँ हैं, और हम नैतिक या धार्मिक प्राणी हैं।

बाइबल के इस दृष्टिकोण से, हम देख सकते हैं कि हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पुराने नियम के लोगों और आधुनिक लोगों के बीच की असमानताओं को बढ़ा-चढ़ाकर न बताएँ। सतह के नीचे, हम लोग उन प्राचीन लोगों से बहुत अलग नहीं हैं। यद्यपि हम पूर्णत: उनके समान नहीं हैं, लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि तार्किक, भाषाई, और नैतिक गुण जो हम में प्रधानता से हैं वे उनके जीवनों में भी थे। और इन कारणों से, हम भरोसा कर सकते हैं कि पुराने नियम को आज हमारे समय में सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है। जिन लोगों ने इसे लिखा और जिन लोगों के लिए इसे लिखा गया वे हमारे ही समान परमेश्वर का स्वरूप थे।

दूसरा, हम भी पुराने नियम के लोगों के समान हैं क्योंकि सारे मनुष्य पाप में गिरे हुए हैं। हम सब रोमियों 3:12 में पौलुस के इन प्रसिद्ध शब्दों से अच्छी तरह परिचित हैं:

> सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। (रोमियों 3:12)

प्रेरित ने इसे स्पष्ट किया कि सब लोगों ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से दूर हो गए हैं। और यह केवल नये नियम की शिक्षा नहीं है-सुलैमान ने भी मन्दिर के समर्पण के समय 1 राजा 8:46 में कुछ ऐसा ही कहा था:

> निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है। (1 राजा 8:46)

हम पुराने नियम के लोगों के साथ परमेश्वर के स्वरूप से गिरने के गुण में साझी हैं इसलिए पुराने नियम के लोगों के परमेश्वर से पाप की ओर झुकाव को समझना हमारे लिए कठिन नहीं है। हमारे लिए यह समझना कठिन नहीं है कि पुराने नियम के लेखकों ने पाप और उसकी भ्रष्टता पर इतना अधिक ध्यान क्यों दिया। इस स्तर पर हम पुराने नियम से संबंधित हैं क्योंकि हम भी पुराने नियम के मूल पाठकों के समान ही पापी हैं। और पुराना नियम नये नियम के समान ही पापियों के छुटकारे पर ध्यान देता है। परमेश्वर ने पुराने नियम के समय में पापी लोगों से जो कुछ कहा वह आज के पापियों के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है।

तीसरा, मनुष्य के पाप में गिरने के बाद से, सदा यही स्थिति रही है कि परमेश्वर के साथ अपने संबंध के अनुसार मनुष्य दो समूहों में विभाजित हैं। आपको याद होगा कि सीनै पहाड़ पर, निर्गमन 19:6 में परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपनी विशेष वाचा के संबंध के बारे में इस प्रकार कहा:

> और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन 19:6)

और 1 पतरस 2:9 में पतरस ने इस पद को उद्धृत किया परन्तु उसे नये नियम की कलीसिया पर लागू किया। उसने कहा:

> तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो। (1 पतरस 2:9)

यद्यपि पुराने नियम और नये नियम के परमेश्वर के लोगों के बीच भिन्नताएँ हैं, परन्तु निरन्तर संबंध भी है। मानव अब भी परमेश्वर के साथ संबंध के अनुसार विभाजित है।

मानवता के विभाजनों का वर्णन करने के कई तरीके हैं। एक बहुत ही सहायक तरीका है कि सम्पूर्ण बाइबल में परमेश्वर तीन समूहों की पहचान करता है: पहला, खोए हुए लोग क्योंकि वे परमेश्वर के साथ की वाचा के बाहर हैं; दूसरा, वे लोग जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं फिर भी खोए हुए हैं, अपने पापों से छुटकारा नहीं पाया है; और तीसरा, वे लोग जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं और जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं और जिन्होंने अनन्तकालीन उद्धार पाया है। लोगों के ये तीन समूह पुराने नियम में विद्यमान थे और वे आज नये नियम के समय में भी विद्यमान हैं। इन समकक्षताओं के कारण, पुराने नियम के हमारे लिए प्रासंगिक होने की हमारी अपेक्षा उचित है। मानव जाति हमारे समय में उसी प्रकार विभाजित है जिस प्रकार यह पुराने नियम के समय में थी। और इस कारण, इस्राएल के लिए परमेश्वर का वचन हमारे लिए उसका वचन है।

अत: जब हम पुराने नियम को आज अपने समय में लागू करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि हमारे और पुराने नियम के बीच कम से कम तीन प्रकार के संबंध हैं-हम उसी परमेश्वर की, उसी संसार में, उसी प्रकार के लोगों के रूप में सेवा करते हैं।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि वही परमेश्वर, वही संसार, और उसी प्रकार के लोग हमें पुराने नियम से जोड़ते हैं, तो हमें उस विकास पर भी ध्यान देना चाहिए जो पुराने नियम और नये नियम के बीच हुआ है।

विकास

इस शीर्षक को हम कई प्रकार से देख सकते हैं, परन्तु हम केवल संबंधों की तीन रेखाओं द्वारा स्थापित प्रारूप का पालन करेंगे। हम देखेंगे कि किस प्रकार युगीय विकास, सांस्कृतिक विकास और व्यक्तिगत विकास हुए हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

युग-संबंधी

सबसे पहले, यद्यपि हम जानते हैं कि पुराने नियम और नये नियम में उसी अपरिवर्तनीय परमेश्वर से व्यवहार कर रहे हैं, परन्तु हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर ने स्वयं को युगों या कालों में प्रकट किया है। बाइबल का इतिहास एक लम्बा अभिलेख है, जिसमें परमेश्वर ने अपने आप को थोड़ा-थोड़ा करके प्रगतिशील रूप में, उद्धार के इतिहास के परमेश्वर द्वारा निर्धारित अन्त की ओर बढ़ने के दौरान, अपने लोगों पर प्रकट किया है। आसान शब्दों में, अब्राहम परमेश्वर के बारे में नूह से अधिक जानता था। मूसा अब्राहम से अधिक जानता था; दाऊद मूसा से अधिक जानता था; और परमेश्वर ने नये नियम के विश्वासियों पर पहले से कहीं अधिक प्रकट किया। इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 1:1 और 2 में इस बिन्दू पर बल दिया है:

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की। (इब्रानियों 1:1-2)

दुर्भाग्यवश, हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब आज हमारे जीवनों में पुराने नियम को लागू करने के संबंध में युगों के प्रकारों पर ध्यान देने के बारे में बहुत अधिक असमंजस है। बहुत से मसीही उचित रूप से विश्वास करते हैं कि पुराना नियम हम पर लागू होता है, परन्तु हमारे युग में पुराने नियम के सन्देश को लागू करने के उनके अलग तरीके हैं। यद्यपि इन विषयों पर बहुत विभिन्नताएँ हैं, लेकिन तीन मुख्य प्रवृत्तियों के बारे में सोचना सहायक है।

सन्तुलन की एक ओर कई चरम स्थितियाँ हैं जो बाइबल के विश्वास के खण्डित विचार को प्रोत्साहित करती हैं। ये मसीही पवित्र वचन के विविध युगों या कालों के बीच भिन्नताओं पर बल देते हैं। वास्तव में, वे पुराने नियम के काल और हमारे अपने समय के बीच की भिन्नताओं पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि उनमें आधुनिक विश्वासियों पर पुराने नियम की केवल उन बातों को लागू करने की प्रवृत्ति है जिन्हें नये नियम में दोहराया गया है। जब तक नया नियम पुराने नियम की किसी शिक्षा या व्यवहार पर कोई टिप्पणी नहीं करता है, ये मसीही मानते हैं कि पुराना नियम लागू नहीं होता है।

सन्तुलन की दूसरी छोर पर कई चरम परिस्थितियाँ हैं जो बाइबल के विश्वास के सपाट विचार को प्रोत्साहित करती हैं। ये मसीही उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिनमें पवित्र वचन के विविध युगों के दौरान कोई बदलाव नहीं हुआ है। वास्तव में, वे पुराने नियम और नये नियम को इतना एकीकृत मानते हैं कि जब तक नया नियम पुराने नियम की शिक्षा या व्यवहार पर कोई टिप्पणी नहीं करता है, तो ये मसीही मानते हैं कि पुराने नियम का जितना संभव हो उतनी निकटता से पालन किया जाना चाहिए।

इन अध्यायों में, बाइबल के इतिहास को एकीकृत और विकासशील दोनों रूपों में देखने वाली विधि से पवित्र वचन के युगों को देखने के द्वारा हम इन दोनों चरमों से बचेंगे। हमारा दृष्टिकोण बाइबल के इतिहास के दौरान जो बातें समान रही हैं और जो बदल गई हैं उन दोनों पर बराबर ध्यान देने का प्रयास करता है। हम यह मानेंगे कि सम्पूर्ण पुराना नियम हमारे लिए प्रासंगिक है, परन्तु साथ ही यह भी कि पुराने नियम का प्रत्येक आयाम विकसित हुआ है। हम पुराने नियम में कुछ भी ऐसा नहीं मानेंगे जो आज हमारे लिए अनुपयुक्त या अप्रासंगिक है, परन्तु हम इस बात पर ध्यान दिए बिना पुराने नियम की किसी शिक्षा को लागू भी नहीं करेंगे कि परमेश्वर ने नये नियम में क्या प्रकट किया है। इसकी अपेक्षा, नये नियम की जाँच से गुजरने के द्वारा पुराने नियम की शिक्षाओं को युगीय समायोजनों से गुजरना चाहिए। एक शब्द में, विकासशील नमूना हमें सिखाता है कि सम्पूर्ण पुराना नियम हमारे लिए प्रासंगिक और अधिकारपूर्ण है, परन्तु साथ ही यह कि सम्पूर्ण पुराने नियम को नये नियम के प्रकाश में लागू किया जाना चाहिए।

यह विकासशील नमूना एक रूपक का पालन करता है जिसे प्रेरित पौलुस ने उद्धार के इतिहास पर लागू किया। गलातियों 3:24 में वह बाइबल के इतिहास के चरणों को एक बच्चे के विकास के चरणों के रूप में बताता है:

> इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। (गलातियों 3:24)

पुराने नियम का विश्वास बच्चे को दिए जाने वाले निर्देशों के समान था; नये नियम का विश्वास एक वयस्क वारिस को दिए जाने वाले निर्देशों के समान है।

अब, इस रूपक के बारे में सोचें जिसका बाइबल के विश्वास के विकास का वर्णन करने के लिए पौलुस ने प्रयोग किया। सामान्यत:, हम बच्चों को उचित नियमों के बारे में बताते हैं: “सड़क पर मत जाओ। चूल्हे को मत छूओ।” परन्तु जब बच्चे वयस्क हो जाते हैं, तो हम उनसे यह अपेक्षा नहीं रखते हैं कि वे अब भी सड़क पर न जाएँ या चूल्हे से दूर रहें। आखिरकार, वे अब वयस्क हैं। परन्तु हम वयस्कों से उस बुद्धि को याद रखने की अपेक्षा रखते हैं जिसे सिखाने के लिए बचपन के नियमों को बनाया गया था। हम वयस्कों से यह याद रखने की अपेक्षा रखते हैं कि सड़क और चूल्हे खतरनाक हैं और उनका सावधानी से प्रयोग करना चाहिए। एक वयस्क के लिए दो वर्षीय बालक के समान नियमों से बन्धे रहना मूर्खतापूर्ण होगा। परन्तु दो वर्षीय बालक के नियमों की बुद्धि को भूल जाना भी उतना ही मूर्खतापूर्ण है।

जैसा हम इन अध्यायों में देखेंगे, बाइबल के विश्वास की भी बहुत कुछ यही सच्चाई है। कई प्रकार से, पुराना नियम एक बच्चे को बताए गए नियमों के समान है। इसे पुराने नियम के समयों में इस्राएल के लोगों की आत्मिक अवस्थाओं के लिए उचित रूप से बनाया गया है। अब, नये नियम के विश्वासियों के रूप में हम दो मूर्खतापूर्ण दिशाओं में जा सकते हैं। पहला, हम पुराने नियम के दिनों में वापस लौटने का प्रयास कर सकते हैं और पुराने नियम के विश्वास का अनुकरण कर सकते हैं जैसे कि हम स्वयं पुराने नियम के समयों में रह रहे हों। परन्तु इसका अर्थ मसीह और उद्धार के उसके महान कार्य का खण्डन करना होगा। और दूसरा, हम यह कहने की परख में पड़ सकते हैं कि अब हम नये नियम के विश्वासी हैं इसलिए अब पुराने नियम में हमारे लिए कुछ नहीं है। परन्तु यह भी गलत है। पुराना नियम हमें हमारे मसीही विश्वास के बारे में बहुत कुछ सिखाता है। बाइबल के विश्वास का विकासशील नमूना हमें पुराने नियम की सराहना करना और उसके अधिकार को मानना सिखाता है, परन्तु उन लोगों के समान जो जगत के अन्त के समय में रहते हैं।

सांस्कृतिक

दूसरा, हमारे समय में पुराने नियम को समझने के लिए, हमें सांस्कृतिक विकासों को देखना होगा। यदि हम अपने जीवनों को पुराने नियम के पवित्र वचनों के लेख से जोड़ना चाहते हैं, तो हमें पुराने नियम में प्रतिनिधित्व की गई संस्कृतियों और हमारे संसार की संस्कृतियों के बीच भिन्नताओं पर ध्यान देना होगा।

सांस्कृतिक विकासों को स्वीकार करने के लिए, हम में एक तरफ, अपने और पुराने नियम के बीच सांस्कृतिक समानताओं को देखने की दिलचस्पी होनी चाहिए। हम किन सांस्कृतिक प्रारूपों का सामना करते हैं जो अब्राहम के अनुभव के समानान्तर हैं? हमारी और दाऊद की संस्कृति में क्या समानता है? और दूसरी तरफ, हम में विद्यमान सांस्कृतिक भिन्नताओं को देखने की दिलचस्पी होनी चाहिए। मानवीय संस्कृति में पुराने नियम के प्राचीन समाजों से किस प्रकार का बदलाव आया है? कौन से रिवाज और व्यवहार अलग हैं? हमें इन प्रश्नों का उत्तर देना है, और जब हम पुराने नियम को आधुनिक जीवन में लागू करते हैं तो हमें पुराने नियम के सन्देश में उचित सांस्कृतिक सामंजस्य बैठाना होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निजी

तीसरा, पुराने नियम को अपने समय में लागू करने के लिए हमें निजी सामंजस्य बैठाने होंगे। हमें पुराने नियम के लोगों और अपने समय के लोगों पर ध्यान देना होगा। पुराने नियम के लोगों और हमारे आधुनिक संसार में रहने वाले लोगों के बीच बहुत सी समानताएँ हैं, परन्तु हमें यह भी समझना है कि आधुनिक लोगों और प्राचीन लोगों के बीच बहुत सी भिन्नताएँ भी हैं। यदि हम पुराने नियम के प्राचीन पदों को उचित रूप से लागू करने की आशा रखते हैं, तो हमें इन निजी बदलावों पर ध्यान देना होगा।

उदाहरण के लिए, हम सब को इस प्रकार के प्रश्न पूछने की आवश्यकता है। पुराने नियम के लोगों की तुलना में हमारा व्यक्तिगत जीवन कैसा है? समाज में हमारी क्या भूमिकाएँ हैं? हमारी आत्मिक अवस्था क्या है? पुराने नियम के इस पात्र या पुराने नियम के उस पात्र की तुलना में हम किस प्रकार प्रभु की सेवा कर रहे हैं? पुराने नियम में हम जिन लोगों को देखते हैं उनकी तुलना में हमारे विचार, कार्य और भावनाएँ कैसी हैं? प्राचीन पुराने नियम के लोगों और आधुनिक लोगों के बीच बदलावों को ध्यान में रखने के द्वारा, हम इस बात को बेहतर रूप से समझ सकते हैं कि पुराने नियम को अपने समय में कैसे लागू किया जाए।

जब हम इन अध्यायों में आगे बढ़ते हैं, तो हम बार-बार देखेंगे कि हमें पुराने नियम के विशिष्ट विषयों के युगीय, सांस्कृतिक और निजी विकासों को ध्यान में रखते हुए पुराने नियम से अपने समय में जाने के लिए तैयार रहना होगा। यदि हम इन विषयों पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं, तो हम पुराने नियम को उस प्रकार समझने में असफल हो जायेंगे जिस प्रकार परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम इसे समझें।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने देखा कि मसीहियों के लिए पुराने नियम का अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है। हमने अपने और इस प्राचीन पुस्तक के बीच की दूरी को स्वीकार कर लिया है, परन्तु हमने यह भी देखा कि नया नियम दृढ़ता से पुष्टि करता है कि पुराना नियम हमारे लिए प्रासंगिक है। इसमें अब भी हमारे मसीही जीवन का मार्गदर्शन करने का अधिकार है। और अन्ततः हमने पुराने नियम को अपने समय में लागू करने की प्रक्रिया को देखा। हमें सर्वदा इस बात को ध्यान में रखना है कि पुराने नियम के विषय कालान्तर में किस प्रकार विकसित हुए हैं और उनका आधुनिक संसार में किस प्रकार प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस अध्याय में हमने केवल कुछ ही प्राथमिक परन्तु अत्यधिक महत्वपूर्ण विषयों को देखा है। जब हम राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन के इस सर्वेक्षण को आगे बढ़ाते हैं, तो हमें इन विचारों को सदा मन में रखना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम पायेंगे कि पुराना नियम आत्मिक सामर्थ से भरपूर अद्‌भुत स्रोत है जिसे परमेश्वर ने हर युग में अपने लोगों के लिए उपलब्ध करवाया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।